राष्ट्रीय छात्रशक्ति

वर्ष 2 ■ अंक 3 ■ जून 2018 ■ ₹10 ■ पृष्ठ 32

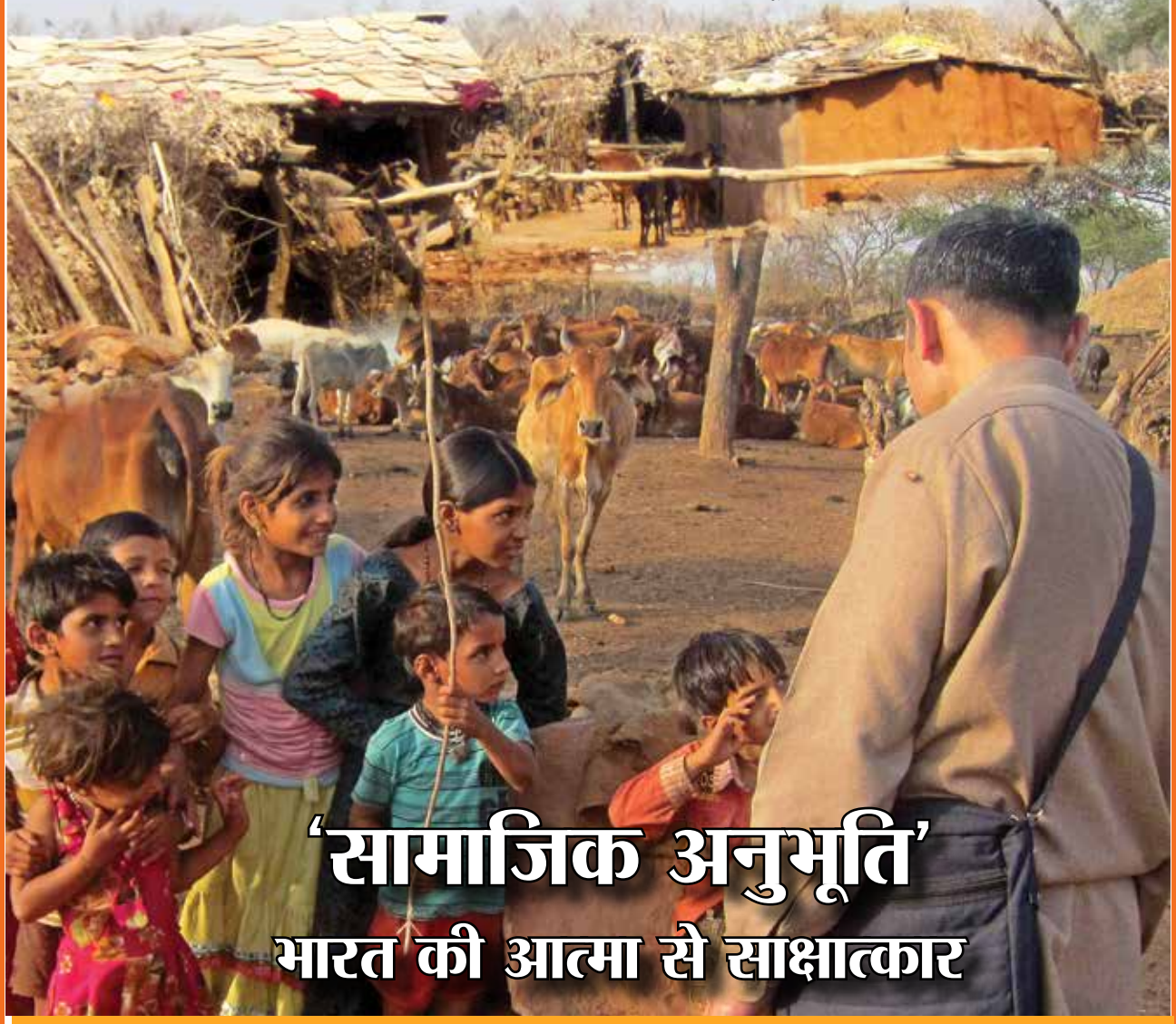

‘सामाजिक अनुभूति’
भारत की आत्मा से साक्षात्कार

भारत की विरासत को आगे ले जाने के लिए परिषद् के कार्यकर्ता प्रतिबद्ध : सुबैय्या 11

SENSITIZING WITH EDUCATION 18

जेएनयू में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर हमला, वामपंथियों ने रोकी फिल्म की स्क्रीनिंग 25

राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद् बैठक, गुवाहाटी

राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद् बैठक के दौरान मंचासीन अभाविप के राष्ट्रीय अध्यक्ष एस. सुबैय्या, राष्ट्रीय महामंत्री आशीष चौहान व अन्य

राष्ट्रीय कार्यकारी बैठक में त्रिपुरा के मुख्यमंत्री बिप्लब देव स्मृति चिह्न देकर सम्मानित करते अभाविप के राष्ट्रीय अध्यक्ष – एस सुबैय्या , महामंत्री आशीष चौहान एवं राष्ट्रीय संगठन मंत्री सुनील आम्बेकर

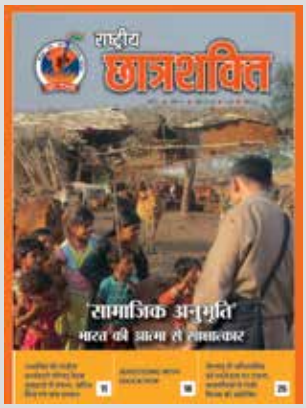

राष्ट्रीय
छात्रशक्ति
शिक्षा–क्षेत्र की प्रतिनिधि–पत्रिका

वर्ष 2, अंक 3
जून, 2018

संपादक
आशुतोष भटनागर
संपादक–मण्डल :
संजीव कुमार सिन्हा
अवनीश सिंह
अभिषेक रंजन

संपादकीय पत्राचार :
राष्ट्रीय छात्रशक्ति
26, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नयी दिल्ली - 110002.
फोन : 011-23216298

chhatrashakti.abvp@gmail.com
www.facebook.com/rashtriyachhatrashakti
www.twitter.com/chhatrashakti1

स्वामी, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक **राजकुमार शर्मा** द्वारा 26, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, आई.टी.ओ. के निकट, नयी दिल्ली - 110002 से प्रकाशित एवं ओशियन ट्रेडिंग कं., 132 एफ. आई. ई., पटपड़गंज इण्डस्ट्रियल एरिया, नयी दिल्ली-110092 से मुद्रीत।

इस अंक में

05 **सामाजिक अनुभूति से जुड़ते शहर और गांव**
अनुभूति की शुरूआत प्रत्येक वर्ष अप्रैल महीने में होती है जो जुन महीने तक चलती है। इन महीनों में भीषण गर्मी पड़ती...

संपादकीय	04
अनुभूति ही नही प्रत्यक्षानुभूति	07
भारत की विरासत को आगे ले जाने के लिए परिषद् के कार्यकर्ता प्रतिबद्ध : सुबैय्या	11
SRISHTI – 2018 : INNOVATION EXCHANGE HELD IN BENGALURU	13
व्यक्तित्व निर्माण की अनूठी पाठशाला	14
पर्यावरण सरंक्षण के लिए आगे आयें युवा: आदित्य	17
SENSITIZING WITH EDUCATION	18
प्रकृति एवं समाज पर केन्द्रित कविता संग्रह 'चुप नहीं बैठुंगा' का विमोचन	19
भारत कोई भूमि का टुकड़ा नहीं: श्रीनिवास	20
अभाविप, बिहार द्वारा 'व्यक्तित्व विकास शिविर' का आयोजन	21
देश में प्रजातंत्र है या सामंतशाही	22
पक्षियों को बचाने के लिए आगे आया अभाविप	24
जेएनयू में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर हमला	25

वैधानिक सूचना : राष्ट्रीय छात्रशक्ति में प्रकाशित लेख एवं विचार तथा रचनाओं में व्यक्त दृष्टिकोण संबंधित लेखकों के हैं। संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। समस्त प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र दिल्ली होगा।

संपादकीय

भारत गांवों का देश है। सदैव से यहां की संस्कृति का आधार रहे ऋषि और कृषि। ऋषियों ने जीवनमूल्य दिये तो कृषि ने जीविका। दोनों ने मिल कर भारत को विश्वगुरु बनाया और सोने की चिड़िया भी।

शहरीकरण को अंग्रेजों की देन मानने वाले भूल करते हैं। यह भारत के लिये नयी बात नहीं है। जब अंग्रेज भारत में आये, उस समय भी भारत में छः सौ से अधिक राज्य थे और उतनी ही उनकी राजधानियां, जिनमें उस समय के विश्व में संभव सभी सुविधाएं मौजूद थी। भारत में व्यापार करने की अनुमति मांगने के लिये जहांगीर के दरबार में उपस्थित होने वाला ईस्ट इंडिया कंपनी का प्रतिनिधि थॉमस रो दरबार की भव्यता देख कर भौचक्का रह गया था।

इसके बावजूद शहरों और राजधानियों की यह भव्यता गांवों में होने वाले अन्न उत्पादन और हस्तशिल्प पर निर्भर थी जिसके कारण बार-बार आक्रमण से ध्वस्त होने वाले अयोध्या, मथुरा, काशी और सोमनाथ जैसे मंदिर हर बार पहले से अधिक भव्यता के साथ उठ खड़े होते थे। अंग्रेजों के आने के बाद भी यह क्रम चलता रहा किन्तु 18वीं शताब्दी के अंत से पूर्व ही यह चित्र बदलने लगा और देखते-देखते भारतीय गांव अकाल की विभीषिका से जूझने के लिये बाध्य होने लगे।

स्वतंत्रता के पश्चात भी गांवों को इस पीड़ा से छुटकारा नहीं मिल सका। जिस नेतृत्व के हाथ में भारत का भविष्य आया वह एक ओर अपनी ऐतिहासिक विरासत से अनजान था तो दूसरी ओर औद्योगिक क्रांति से बुरी तरह प्रभावित। परिणाम यह हुआ कि विकास की दिशा पूरी तौर पर उलट गयी और वे गांव जो पूरे देश की जरूरतें पूरी किया करते थे, अपनी आवश्यकता के लिये भी शहरों पर निर्भर हो गये।

आज मशीनों और डीजल के लिये ही नहीं बल्कि खाद और बीज के लिये भी किसान शहरों पर निर्भर है। कई मामलों में तो विदेशों पर भी। ट्रैक्टर ने बैलों को विस्थापित कर दिया और गाय बोझ हो गयी। अर्थव्यवस्था के इस उलटे घूमते चक्के ने अन्नदाता किसान को आत्महत्या के मुहाने पर खड़ा कर दिया है। अपनी भूमि से उजड़ कर शहरों में झुग्गी बस्तियों में नारकीय जीवन जीने को विवश यह ग्रामीण विकास के अंधेरे पक्ष के भुक्तभोगी है।

अभाविप ने शिक्षा क्षेत्र का संगठन होते हुए भी देश के बुनियादी सवालों से अपने को जोड़े रखा है। 1948 में भारतीयकरण उद्योग, 1960 के दशक में अंतरराज्यीय छात्र जीवन दर्शन, 1970 के दशक में चला ग्रामोत्थान हेतु छात्र अभियान और 1980 के दशक में विकासार्थ विद्यार्थी इसी संवेदना में से उपजे हैं।

गांव और शहर के बीच की दूरी को पाटना आज की प्रमुख चुनौती है और इसे स्वीकार करते हुए परिषद ने छात्र-युवाओं की वर्तमान पीढ़ी को सामाजिक अनुभूति कार्यक्रम के अंतर्गत गांवों से साक्षात्कार की योजना बनायी है। इसके अंतर्गत सरल ग्राम्य जीवन का अनुभव और वहां के लोगों की स्निग्ध आत्मीयता तपती दोपहरी में शीतलता की अनुभूति कराती है और ग्राम दर्शन का यह अनुभव जीवन भर के लिये मन पर अंकित हो जाता है।

गुवाहाटी में संपन्न राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद में वर्ष भर की गतिविधियों की समीक्षा की गयी तो आगामी वर्ष की योजना भी बनी। नये दायित्व और नये संकल्प के साथ नये सत्र के लिये कार्यकर्ता नये उत्साह में हैं। आपकी प्रतिक्रिया की अपेक्षा के साथ छात्रशक्ति का नया अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है।

आपका

संपादक

सामाजिक अनुभूति से जुड़ते शहर और गांव

अनुभूति की शुरूआत प्रत्येक वर्ष अप्रैल महीने में होती है जो जुन महीने तक चलती है। इन महीनों में भीषण गर्मी पड़ती है परंतु यह विद्यार्थी परिषद् का संस्कार ही है कि कार्यकर्ता बिना गर्मी - धूप का परवाह किये गांवों का भ्रमण करते हैं। भ्रमण करने वालों में अधिकतर वे छात्र शामिल हैं जो दिन - रात एसी कमरे में लैपलॉप व मोबाईल से चिपके रहते हैं।

। अजीत कुमार सिंह।

भारत की आत्मा गांवों में बसती है या यूं कहें तो भारत की पहचान गांव है। अगर आपको भारत की वास्तविक संस्कृति से परिचित होना हो तो गांव जाना होगा। देश को सुदृढ़ और आर्थिक मजबूती प्रदान करने में कृषि एवं ग्रामीण उद्योगों का अपना महत्व है। गांव के इस महत्व को जानने और समझने के लिए अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के द्वारा पिछले तीन सालों से एक अनोखा कार्यक्रम चलाया जा रहा है, जिसका नाम है 'सामाजिक अनुभूति'। सामाजिक अनुभूति के तहत छात्र ग्रामीण जीवन दर्शन का प्रत्यक्ष अनुभव कर रहे हैं। अनुभूति का उद्देश्य शहर में रहने वाले युवाओं को ग्रामीण परिवेश से परिचित करवाना एवं उसके प्रति आत्मीयता का भाव पैदा करना है। अनुभूति की शुरूआत प्रत्येक वर्ष अप्रैल महीने में होती है जो जून महीने तक चलती है। इन महीनों में भीषण गर्मी पड़ती है परंतु यह विद्यार्थी परिषद् का संस्कार ही है कि कार्यकर्ता बिना गर्मी - धूप का परवाह किये गांवों का भ्रमण करते हैं। भ्रमण करने वालों में अधिकतर वे छात्र शामिल हैं जो दिन - रात एसी कमरे में लैपलॉप व मोबाईल से चिपके रहते हैं। सामाजिक अनुभूति अभियान के तहत शामिल छात्र चयनित गांवों में प्रवास करते हैं। वह जिस गांव में रहते हैं, खुद के खाने के लिए गांव के किसी परिवार से अपील करते हैं। इस दौरान ग्रामीण जीवन, उनकी रोजमर्रा की जिंदगी, उनकी जरूरतों और देश के विकास में उनके योगदान से छात्र साक्षात अनुभूति कर रहे हैं।

अनुभूति के तहत महाराष्ट्र प्रांत की एक टोली तलासारी तालुका के कोंदरपाड़ा गांव में प्रवास करने गया। प्रवास के दौरान कार्यकर्ताओं को कई तरह की जीवनशैली का अनुभव प्राप्त हुआ। यह गांव शहरी चकाचौंध से बिल्कुल दूर है, प्रदूषण मुक्त शुद्ध वातावरण में ग्रामीण हंसी – खुशी अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं। एक ओर जहां शहर में अपने साथ वाले फ्लैट में रहने वाले की खबर नहीं है वहीं गांव में अगर एक व्यक्ति बीमार पड़ जाये तो समस्त ग्रामीण उसकी देखभाल में जुट जाते हैं। कार्यकर्ता गांव की जीवन पद्धति को देखकर रोमांचित हो रहे हैं। अभावों एवं समस्या के बीच भी खुशहाल जिंदगी जीने वाले ग्रामीणों का हाल जानने इस बार अभाविप के राष्ट्रीय संगठन मंत्री सुनील आंबेकर खुद कोंदरपाड़ा गांव पहुंचे, श्री आंबेकर के साथ तत्कालीन केन्द्रशासित राज्यों के क्षेत्रीय संगठन मंत्री विक्रांत खंडेलवाल भी थे। अभाविप के इतने बड़े अधिकारी को देखकर गांववासी काफी हर्षित हुए।

ग्रामीणों ने कहा कि अभाविप के पदाधिकारी भी सामान्य कार्यकर्ताओं की तरह हमारे गांव में पधारे, यह मेरे लिए सौभाग्य की बात है। अभाविप के कार्यकर्ता प्रवास से वापस जब अपने गंतव्य की ओर लौट रहे थे तो सबके आंखों में आंसू थे, उन्हें लग रहा था मानों अपने परिवार से बिछड़ रहे हों। चंद समय में ही कार्यकर्ताओं का उस गांव से अटूट रिश्ता बन चुका था।

वहीं ग्रामीण जीवन दर्शन व अनुभूति के तहत अभाविप झारखंड के कार्यकर्ताओं ने प्रांत के विभिन्न गांवों की वास्तविक स्थिति का अनुभव प्राप्त किया। कार्यकर्ताओं की टोली को जिलावार बांटा गया है। अभाविप प्रदेश मंत्री रौशन कुमार के अनुसार तो झारखंड में सामाजिक अनुभूति कार्यक्रम जून महीने तक चलेगा। उन्होंने बताया कि इस कार्यक्रम के तहत राज्य के सभी जिलों के छात्र - छात्राएं ग्रामीण क्षेत्रों में जाकर ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के जीवन का प्रत्यक्ष अनुभव कर रहे हैं। इस अभियान के माध्यम से अभाविप सामाजिक दूरियों को पाटने की कोशिश कर रही है। हमारी युवा पीढ़ी को अपने ग्रामीण जीवन के अनुभव का होना बहुत जरूरी है। राजमहल इकाई के कार्यकर्ताओं ने जेठ की दोपहरी में प्रखंड क्षेत्र के विभिन्न गांवों का भ्रमण किया। चिलचिलाती धूप में जब वे गांव की ओर बढ़ रहे थे कुछ कार्यकर्ताओं के मन में गुस्से का भाव था कि लेकिन जब वे लोग गांव में पहुंचे और गांव की समस्याओं से अवगत हुए और कम संसाधनों के रहने के बावजूद खुशहाली को देखकर भाव विभोर हो गये। कार्यकर्ताओं की टोली में एसएफडी के प्रांत सह संयोजक भी थे, उन्होंने बताया कि गांव के अधिकांश लोग भोजन में खुद से पैदावार कर पका हुआ खाते हैं. कार्यकर्ताओं ने अपने अनुभव का साझा करते हुए कहा कि छात्रों को शहरी चकाचौंध से दूर हट कर गांव की ओर जाना चाहिए व गांव की वास्तविक स्थिति का अनुभव प्राप्त करना चाहिए। आज भी आधे से अधिक ग्रामीण खेती के सहारे अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं।सामाजिक अनुभूति के लिए अभाविप कार्यकर्ताओं का जत्था जब पाकुड़ पहुंचा तो वहां की स्थिति देखकर कार्यकताओं की आंखों में आसू आ गये। पाकुड़ के हिरणपुर गांव में 22 परिवार रहते हैं, उनके लिए एक भी चापानल या कूप नहीं हैं। उन्हें मीलों दूरी तय कर पानी लाना पड़ता है। वहीं बिजली की स्थिति भी ठीक नहीं है।

जयपुर प्रान्त के हजारों युवा ने तपती दोपहरी मे लिया समाज का प्रत्यक्ष अनुभव

अभाविप जयपुर प्रान्त में सामाजिक अनुभूति 2018 का प्रथम चरण समाप्त हो चुका है। तपती दोपहरी में कार्यकर्ताओं ने गांवों का भ्रमण कर उनका हाल जाना। अभाविप के प्रान्त अध्यक्ष डॉ.राजेश यादव ने बताया कि सात विभागों में 22 जिलों में अनुभूति कार्यक्रम 15 अप्रैल से 20 अप्रैल तक चला जिसमें 1298 विस्तारकों ने 488 गांवो में 10,380 परिवारों के बीच जाकर उनके वास्तविक जीवन का अनुभव किया। विस्तारकों ने गांव, घर तथा कच्ची बस्तियो तक जाकर के समाज जीवन के वर्तमान परिप्रेक्ष्य से जुडी हर समस्या का प्रत्यक्ष अनुभव किया। कार्यकर्ताओं के मुताबिक आज भी ग्रामीण क्षेत्रो में मूलभूत सुविधाओ का अभाव नजर आ रहा है। लोगों को राज्य सरकार द्वारा प्रदत्त मूलभूत सुविधाओं जैसे - पानी , बिजली, शिक्षा ,रोजगार तथा परिवहन साधनों का समुचित लाभ नहीं मिल पा रहा है। सरकारी विद्यालयों में छात्रों की संख्या अधिक है लेकिन वहां शिक्षक नही है। डिजिटल भारत अभियान धरातल पर दम तोड़ता नजर आ रहा है, क्योंकि ग्राम पंचायतें स्वयं जागरूक नहीं है। गांवो में मोबाइल का प्रचलन देखने को मिला इससे तरक्की की उम्मीद दिखी। प्रांत अध्यक्ष ने बताया कि विस्तारकों को प्रथम दिन सभी प्रशिक्षण केन्द्रों पर दिन भर प्रशिक्षण देकर उनको निर्धारित उपकेंद्रों पर रवाना किया। विस्तारकों ने लगातार चार दिनों तक गांवो में जाकर परिवारों का हाल जाना।

वहीं जोधपुर प्रांत में भी अनुभूति अपने गांव की, अपने समाज की... कार्यक्रम के तहत 20 जिलों में 1586 कार्यकर्ताओं के द्वारा 436 गांव के 12,101 घरों में रहने वाले परिवारों से संपर्क किया गया। कार्यकर्ताओं ने जब इन परिवारों से संपर्क किया और उनकी परेशानी को जाना तो काफी विचलित हो गये। जेठ की भरी दोपहरी में मनरेगा के तहत ग्रामीणों को काम करता देख कार्यकर्ताओं के आंख में आंसू भर आये। कार्यकर्ताओं ने बताया कि विद्यालय में समुचित मात्रा में शिक्षक नहीं हैं, कहीं – कहीं तो पर्याप्त मात्रा में विद्यालय भवन भी नहीं है। ग्रामीण भारत के दर्शन के दौरान छात्रों ने बाल विवाह, आत्महत्या, नशाखोरी, बाल मजदूरी, दहेज प्रथा, परिवहन संसाधनों का अभाव, कृषि भ्रष्टाचार, स्वास्थ्य भ्रूण हत्या, जाति प्रथा, सड़क, जल शिक्षा सहित व्याप्त समस्याओं के दर्शन व अभावों के बाद भी बढ़ते चलते जनजीवन का अनुभव लिया। इन सब अनुभवों को महसूस कर लौटे कार्यकर्ताओं ने अनुभव कथन के दौरान कहा कि अपने ग्रामीण भारत के लिए कुछ – न- कुछ जरूर करेंगे। ■

अनुभूति ही नही प्रत्यक्षानुभूति

।विक्रांत खण्डेलवाल।

आज से लगभग 20 वर्ष 1997-98 की बात है जब हम विद्यार्थी परिषद् की राजस्थान टीम के साथ लगभग 20 कार्यकर्ता जालौर जिला के पथमेड़ा गांव में चलने वाली भारत की सबसे बड़ी गौशाला में पहुंचे। वहां हमने 2 दिन का एक श्रमानुभव शिविर का आयोजन किया था। उस समय उम्र भी इतनी बड़ी नहीं थी कि 'अनुभूति' जैसे गहरे शब्दों के भावार्थ को समझे लेकन इस शिविर ने ग्राम्य जीवन दर्शन का एक नया अनुभव करवाया था मन के किसी कोने में ग्रामीण जीवन के प्रति संवेदना का बीजारोपण हुआ था। ऐसा ही एक अनुभव 2001-02 में जब अ.भा.विद्यार्थी परिषद् द्वारा 'सील' कार्यक्रम में मुझे आसाम के 'सिलचर' शहर में 2 माह के लिए अनुभव विस्तार कार्यक्रम में भेजा था तब का है जब उस अनजान शहर में खान-पान, रहन-शहन आदि की तमाम कठिनाईयों के बाद भी जब पूर्वोत्तर भारत के इस शहर में यहां की सामाजिक, आर्थिक तथा राष्ट्रीय सुरक्षा की चुनौतियों आदि के बारे में जो अनुभव आया उसी ने इस पूर्वोत्तर भारत के प्रति देखने समझने का दृष्टीकोण को बदल के रख दिया। कई प्रकार के अनुभवों के साथ वो एक माह तो बीत गया हम अपने कार्यक्षेत्र में वापिस भी आ गये किन्तु वहां से जो संवेदनाओं का पीटारा लायें थे उसने हमको पूर्वोत्तर भारत से जीवन पर्यन्त के लिये जोड़ दिया।

उपरोक्त दोनों ही उदाहरण मेरे जीवन में प्रत्यक्षानुभूति के उदाहरण है। स्पिरिचुअल सायन्स रिसर्च फाऊडेशन (SSRE) के अनुसार 'अनुभव' वह है जो पांच और इन्द्रियों मन एवं बुद्धि के माध्यम से प्राप्त किया गया है। उदाहरणार्थ अपने प्रिय व्यंजन को खाने का अनुभव, अपने बच्चे के लिये प्रेम का अनुभव, अपनी बुद्धि द्वारा समस्या को सुलझाना आदि अनुभव की श्रेणी में आते है जो बाते पांच इन्द्रियों, मन एवं बुद्धि की समझ से जो परे है। उसका अनुभव एक 'अनुभूति' निर्मित करती है। मुझे जो 'अनुभूति' का अर्थ समझ में आता है। समाज जीवन के विभिन्न अनुभवों से जब व्यक्ति के मन में सामाजिक संवदेना

का जागरण होता है। और उस जागरण के पश्चात जब वह व्यक्ति उन समस्याओं के समाधान हेतु कुछ करने का निश्चित कर उसमें शारीरिक, बौद्धिक एवं मानसिक रूप से क्रियाशील हो जाता है तब 'अनुभूति' को पूर्णता प्राप्त होती है।

आखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् द्वारा चलायें जा रहे विकासार्थ विद्यार्थी (SFD) के 'अनुभूति' कार्यक्रम का उद्देश्य भी यही है कि आज का विद्यार्थी स्वाधीनता के पश्चात हुए वैश्वीकरण के कारण पश्चात्य संस्कृति एवं जीवन पद्धति का अंधानुकरण करते-करते भारतीय संस्कृति, परम्पराओं तथा एकात्मता के जीवन दर्शन वाले मूल ग्रामीण जीवन से दूर होता गया। शहरीकरण के कारण देश की अधिकांश शहरी आबादी ग्रामीण जीवन दर्शन से वंचित रह गई है। बहुत से शहरी युवाओं ने अपने जन्म से ऊँची अट्टालिकायें, चमचमाती सड़कें, सड़कों पर दौड़ती महंगी गाडियां, बड़े-बड़े मॉल, 24 घण्टे बिजली, पानी, स्वास्थ्य और शिक्षा जैसी मूलभूत सुविधा तथा जहां पैसे से बहुत कुछ खरीदा जा सकने वाला बाजार ही देखा है। उन्होंने कभी ये नहीं देखा कि ग्रामीण जीवन की कठिनाईयों में भी उनका सुख और संतुष्ट दायक जीवनक्रम भी उनके जीवन को खुशहाल बनाता है। एक ग्रामीण परिवार अपनी आवश्यकताओं को सिमित करके उपलब्ध साधनों में ही आनन्द पूर्वक रहता है।

आज का विद्यार्थी यदि भारत को समृद्ध और सम्पन्न बनाना चाहता है तो उसे देश के मूल तत्वों को

समझने के लिए भारत के ग्रामीण सांस्कृतिकि जीवन, उनकी अर्थव्यवस्था, उनके खुशहाल रहने का मर्म जानना होगा। उसे ग्रामीण जीवन का अनुभव करके उसे आत्मसात करना होगा। यह जिम्मेदारी भारत के युवाओं पर ही है, कि युवा भारत के ग्रामीण भागों, शहरी कच्ची बस्तियों के जीवन का दर्शन करें उनकी प्रत्यक्षानुभूति लेकर शाश्वत विकास हेतु मार्ग प्रशस्त करें एक तरफ गावों में जहां समकालीन समस्यायें भी है वहीं दूसरी और कुछ वैश्विक समस्याओं के लिए समाधान भी है। देश का युवा, विद्यार्थी ग्रामीण जीवन का दर्शन करेगा तो वह सकारात्मक विचार से शाश्वत विकास की ओर आगे बढ़ेगा। विकासार्थ विद्यार्थी (SFD) द्वारा 'अनुभूति' के इस सामाजिक प्रकल्प का आयोजन गत कुछ वर्षों से सामाजिक संवेदना युक्त युवा के निर्माण एवं विकास हेतु ही किया जा रहा है।

विकासार्थ विद्यार्थी द्वारा मनुष्य के लिए प्रत्याक्षानुभूति का महत्व समझ कर ही इस अनुठें सामाजिक परिवर्तन वाले प्रकल्प की शुरुआत की गई है। क्योंकि प्रत्यक्षानुभूति के बिना एक मनुष्य को सामाजिक संवेदना युक्त दृष्टि, सामाजिक कार्य की प्रेरणा और समर्पण युक्त क्रियाशीलता मिलना मुश्किल होता है और पर-हित का कार्य किये बिना एक मनुष्य को उसके जीवन की पूर्णता भी प्राप्त नहीं होती है हम जानते है कि भगवान राम के जीवन को पूर्णता अयोध्या के महलों में नहीं बल्कि बनवास में आदिवासी समाज के लिए किये हुए कार्य तथा उनकी संगठन शक्ति के बल पर लंका विजय पर ही मिली थी। स्वामी विवेकानन्द जी के जीवन को पूर्णता उनकी संन्यास प्राप्ति और मोक्ष हेतु साधना से नहीं अपितु भारत भ्रमण और अमेरिका प्रवास के माध्यम से जो उन्होंने हिन्दुत्व का स्वाभिमान जागृत किया उसी से प्राप्त हुई थी उनके क्रांतिकारी विचार ही थे जिन्होंने हजारों क्रांतिकारियों को प्रेरणा दी कि भारत माता की स्वतंत्रता के युद्ध में योद्धा बनों। और एक अंतिम उदाहरण महात्मा गांधी जी तो सूटबूट पहन कर वकालत करने वाले मोहनदास कर्मचन्द गांधी थे जब उन्होंने समाज जीवन की प्रत्यक्षानुभूति के लिए भारत दर्शन की यात्रा पूर्ण की तब उनके शरीर पर केवल एक धोती थी और उसी लाठी और धोती ने उनको आजादी की लड़ाई का महानायक महात्मा गांधी बनाया था।

विकासार्थ विद्यार्थी द्वारा चलाया जा रहा "अनुभूति" कार्यक्रम अब देश के युवाओं के दृश्य परिवर्तन का विश्वविद्यालय बन चुका है। देश के अधिकांश राज्यों में प्रतिवर्ष हजारों विद्यार्थी अपनी परिक्षाओं के बाद खाली समय में ग्रामिण जीवन दर्शन के माध्यम से अपने जीवन में एक नया अनुभव जोड़ रहें है। विद्यार्थीयों द्वारा विभिन्न ग्रामिण क्षेत्रों में रहकर ग्रामिण जीवन को संजोकर रखनेवाले ग्रामवासियों से मिलना, बातें करना, परिवार एवं समाज का दर्शन करना और ग्रामिण जीवन की अनुभूति लेकर आधारभूत विकास के पथ पर चलने का प्रयास करते है।

आखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद द्वारा विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के उदेश्य हेतु विद्यार्थीयों में प्रवृति के प्रति देखने का सकारात्मक भारतीय दृष्टिकोण विकसित हो विकास की भारतीय अवधारणा से वो ओतप्रोत हो उसके मन में देश और समाज की वास्तविक आवश्यकताओं का ज्ञान हो और इन सबके बाद भी वो एक सम्पूर्ण सामाजिक संवेदना युक्त, सांस्कृतिक चेतना युक्त, पश्चिमी अन्धानुकरण मुक्त नागरिक बनें इसी उद्देश्य से विकासार्थ विद्यार्थी के नाम से एक कार्य प्रारम्भ किया गया है।

आखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद द्वारा विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के उदेश्य हेतु विद्यार्थीयों में प्रवृति के प्रति देखने का सकारात्मक भारतीय दृष्टिकोण विकसित हो विकास की भारतीय अवधारणा से वो ओतप्रोत हो उसके मन में देश और समाज की वास्तविक आवश्यकताओं का ज्ञान हो और इन सबके बाद भी वो एक सम्पूर्ण सामाजिक संवेदना युक्त, सांस्कृतिक चेतना युक्त, पश्चिमी अन्धानुकरण मुक्त नागरिक बनें इसी उद्देश्य से विकासार्थ विद्यार्थी के नाम से एक कार्य प्रारम्भ किया गया है। जल, जंगल, जमीन, जन और जानवर के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु विद्यार्थी भी अपना योगदान दें, शाश्वत विकास की कल्पना को आगे बढ़ाते हुए विकास पर्यावरण पूरक एवं किसी का भी शोषण किये बिना हो इस विचार पर यह विकासार्थ विद्यार्थी का आयाम कार्य करता है। पर्यावरण विषयक समस्याएं, वैश्विक तापमान वृद्धि, वृक्षतोड़, जल, वायु, ध्वनि

प्रदुषण कम करने के विकल्प का विचार इस आयाम के माध्यम से होता है। इसको व्यापकता के साथ छात्रों और समाज के मध्य चलाने के लिए अनेक अभियानों का आयोजन सदैव करती रहती है प्लास्टिक मुक्त सिंहस्थ अभियान, नर्मदा अध्ययन यात्रा, वृक्षारोपण, जल संधारण प्रयास, श्रमानुभव शिविर जैसे अनेक गतिविधियों के माध्यम से यह सदैव कार्यरत हैं। देश की नदियों, तालाबों को स्वच्छ एवं पुनरू प्रवाहित करने हेतु 'जल आभियान' अलग अलग प्रांतों में चलायें जाते है। 'अनुभूति' कार्यक्रम इस आयाम के द्वारा विद्यार्थियों के लिए ग्रामिण जीवन दर्शन का महाआभियान है। क्योंकि हमारा भारत गावों में बसता है हमारे गांव ही देश की वास्तविक तस्वीर है, जिनको देख कर हम अपने जीवन का लक्ष्य तयकर सकते है गांव को देखकर हम अपने सपने बुन सकते है। गांव की चौपाल पर बैठकर ही हम भारत को विश्व गुरू बनाने की वह पगडण्डी खोज सकते है। जिसकी हमें तलाश है हम ग्रामिण जीवनशैली को समझकर संसार को सुखमय जीवन को संदेश दे सकते है। हमारे गांव ही हमारी विराट संस्कृति के आंगन है जहां भारत की सदियों पुरानी परम्परांये हमें अपनी पहचान बताती है। गांव नवाचार के वाहक है हमें कोई भी नवाचार करना है तो उसके लिए गांव को देखना समझना और उसे महसूस करना होगा। शहरी प्रदुषण युक्त वातावरण में रहकर, आज का विद्यार्थी गांव की गुनगुनी धूप से मिलनेवाली उर्जा से वंचित हो रहा है। गांव उद्यमिता की प्रयोगशाला और प्रेरणापुंज है गांवो की दुर्लभ जीवन शैली हमें दुनियाँ में उद्यमिता के नये द्वार खोलने का अवसर देती है वहाँ सम्बन्धों की अद्यभूत बुनावट है जो विश्व को सहभागिता का पाठ सिखाती है गांव की अनुभूति अनुठी है। इसकी जिवटता आपको नई दिशा देगी। इसलिए आओ! गांव चले हम ... का नारा देकर 'अनुभूति' महाआभियान देशभर में चलता है। जिसमें विश्वविद्यालय, महाविद्यालयों में पढने वाला विद्यार्थी 5-7 दिन अपने घर से दूर रहकर ग्रामिण जीवन का अनुभव लेगा। इस कार्यक्रम हेतु विद्यार्थियों के आधार शिविर ग्रामीण क्षेत्रों में ही लगाये जाते है। वहां से प्रतिदिन 2-4 विद्यार्थियों का एक समुह अपने लिए निश्चित किये गये गांवो में सुबह से शाम तक उपलब्ध साधनों में जाकर वहां का जन जीवन में साथ रहकर वहां की प्रत्येक छोटी बड़ी बातों कों बड़ी बारिकी से देखने समझने का कार्य करता है। विभिन्न सामाजिक, आर्थिक, राष्ट्रीय मुद्दों पर ग्रामिण लोगों से बात करता है अवसर मिलने पर अपनी नई नई जानकारी वहां के लोगों को देता उनकी सुनता है। आवश्यकता होने पर अपनी सामर्थ के अनुसार कोई सेवा का कार्य वहां करता है। ये सब करते करते दिनभर में जो सम्बन्ध निर्माण होते है। उनकी मीठी यादें लेकर शिविर में लौटता है। जहां वह अपने बाकि साथियों के साथ अनुभव बांटता है तथा उनका संकलन करता है साथ ही वहां उपस्थित वरिष्ठ कार्यकर्ता, प्राध्यापकों ने अगले दिन फिर से कार्य करने की उर्जा स्वरूप मार्गदर्शन प्राप्त करता है। यही आधार शिविरों से संचालित होने वाली सब दिन की गतिविधियों की दिनचर्या रहती है। और यही उन सभी प्रतिभागियों के ह्दय परिवर्तन वाली दिनचर्या उनको बदल कर रख देती है।

'अनुभूति' के लिए एक विद्यार्थी जब गांव में जाता है। तब उसके मन में ग्रामीण जीवन के अनेकों सरोकार वाले विषयों जैसे शिक्षा, कृषि, परिवहन, पशुपालन जाति व्यवस्था, जल व्यवस्था, कुपोषण, नशाखोरी, कन्याभ्रूण हत्या, बाल मजदूरी, बाल विवाह, दहेज प्रथा, स्वच्छता, सीमा क्षेत्रों की स्थिति, धर्मांतरण, लव-जिहाद तथा सरकारी योजनाओं का क्रियान्वयन आदि का ध्यान में होता है।

'अनुभूति' के लिए एक विद्यार्थी जब गांव में जाता है। तब उसके मन में ग्रामीण जीवन के अनेकों सरोकार वाले विषयों जैसे शिक्षा, कृषि, परिवहन, पशुपालन जाति व्यवस्था, जल व्यवस्था, कुपोषण, नशाखोरी, कन्याभ्रूण हत्या, बाल मजदूरी, बाल विवाह, दहेज प्रथा, स्वच्छता, सीमा क्षेत्रों की स्थिति, धर्मांतरण, लव-जिहाद तथा सरकारी योजनाओं का क्रियान्वयन आदि का ध्यान में होता है। और जब वो ही विद्यार्थी अनुभूति शिविरों में रहकर लौटता है तब अनेक प्रकार की नई-नई समस्यायें, सम्भावनायें, आवश्यकताएं तथा अवसर उसके पास अनुभव के रूप में होते हैं। जिन्हें वो अपने जीवन में अनुभूति की पूर्णता को उतारता है। रामगंज मण्डी का सिद्धार्थ घरोड़ कहता है कि "आखों

में है आंसू, छाले हैं पांव में - देश मेरा जिन्दा है, अब भी गांव में"। पाटण गुजरात के विवेक जोशी जब गुजरात-पाकिस्तान सीमा पर वहां से आयें लोगों से मिलता है तो वे कहते है कि "जो लोग हिन्दुस्तान आ गये वो सुखी है" बांसवाडा, राजस्थान वे हर्षित आचार्य जब आदिवासी गांव में जाकर देखते है कि "आदिवासी समाज में आज भी अग्रसेन महाराज जैसी परम्परा जिन्दा है।" बिहार के सुजित पासवान जब बाल मजदूरी करने वाले बच्चों और उनके परिवारजनों से मिलते है तब वे कहते है कि "गांवों में दिखती है भारतीय संस्कृति की झलक" लेकिन साथ ही यह भी सच है कि "गांव के बाहर ही दम तोड़ती मिली सरकारी योजनायें" "मरीज को चारपाई पर लिटाकर ही ले जाना पड़ता है अस्पताल" "यहां सिसकियां भरते है महिला सशक्तिकरण के दावें" आदि कर्नाटक के गिरीश बढ़गेर कहते है कि "प्रवृति के दोहन का परिणाम है विकलांग एवं मानसिक रूप से पीड़ित बचपन" कोंकण की श्रेया करपे कहती है कि "इंसानियत क्या होती है महसूस हुआ" जम्मू कश्मीर की नैना डोगरा कहती है कि सीमा पर रहने वाले लोग बोले कि "यहीं रहेगे नहीं तो सेना अकेली हो जायेगी" उड़ीसा की मिताली मोहिनी रथ ने "देखा कि उनके पैरो में चप्पल नहीं है। और महिलायें अधिकतर एक धोती में ही रहती है।" आदि अनेको अनुभव जब कार्यकर्ता शिविर में आकर बांटते है तो उनके मुंह से शब्द कम आंखो से आंसू ज्यादा निकलते है और यही आज के आंसू उनके जीवन को कल पूर्णता प्रदान करेगें।

और अन्त में .....

एक शिविर में आखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के राष्ट्रीय संगठन मंत्री सुनील आम्बेकर जी ने एक छोटी किन्तु गहरी बात बोली थी कि समुद्र किनारे के एक गांव में जब एक पुस्तक के लेखक को पानी की आवश्यकता होने पर एक घर के बाहर कुंवा देखकर वह एक छोटी बालिका से पूछते है कि "मैं आपका पानी पी सकता हूँ क्या" यह सुनकर वह छोटी बालिका हंसती है और बोलती है कि "ये पानी आपका क्या होता है पानी तो सबका है।" उस छोटी सी लड़की की बात ने उस लेखक को एक बड़ा उपन्यास 'समुद्रन्तिका' लिखने की प्रेरणा दी थी। अनुभूति आभियान प्रारम्भ से जुड़ें परिषद के क्षेत्रिय संगठन मंत्री संजय पाचपोर कहते है कि प्रदुषण मुक्त निसर्ग रम्य शुद्ध जलवायु प्रसार में रहकर समाज के लिए कुछ प्रेरणा प्राप्त करने का कार्यक्रम ही अनुभूति है। अनेक साधन सुविधाओं और आवश्यकताओं के अभाव में भी ग्रामिण लोग संतुष्ठिदायक जीवन का आनन्द ले रहे है। इस अभाव में भी समाज को देने का भाव "आतिथि देवो भवः" गांवों मे जीवित है।

"मैं आपका पानी पी सकता हूँ क्या" यह सुनकर वह छोटी बालिका हंसती है और बोलती है कि "ये पानी आपका क्या होता है पानी तो सबका है।" उस छोटी सी लड़की की बात ने उस लेखक को एक बड़ा उपन्यास **'समुद्रन्तिका'** लिखने की प्रेरणा दी थी। अनुभूति आभियान प्रारम्भ से जुड़ें परिषद के क्षेत्रिय संगठन मंत्री संजय पाचपोर कहते है कि प्रदुषण मुक्त निसर्ग रम्य शुद्ध जलवायु प्रसार में रहकर समाज के लिए कुछ प्रेरणा प्राप्त करने का कार्यक्रम ही अनुभूति है।

वर्तमान दौर में हमारा भारत वर्ष दुनियां के सर्वाधिक युवाओं की जनसंख्या उनकी बहुआयामी कुशलता के कारण विश्व गुरू बनने की राह पर बढ़ चला है। इस विकास युग में यह जरूरी है कि समाज का अंतिम व्यक्ति चाहे वो गांव में बैठा हो, पहाड़ों में बैठा हो या फिर किसी शहर की झुग्गी झोपड़ी में बैठा हो, पुरूष हो महिला हो सभी का सहभाग इस विकास यात्रा में होना आवश्यक है। और यह सुनिश्चित करना केवल सरकारों की जिम्मेदारी नहीं है पूरे समाज की और विशेषतः हमारा युवा, विद्यार्थी की ज्यादा जिम्मेदारी बनती है। और यह कार्य वहीं युवा कर सकता है जिसके अन्दर समाज के प्रति एक गहरी संवेदना स्थापित हो और फिर ऐसा संवेदना पूर्ण व्यक्ति देश के संचालन, निर्णय प्रक्रिया में शामिल होता है तो सारी योजनायें देश के सभी लोगों को इस प्रक्रिया में शामिल करने के लिए, सहभागी करने के लिए नये-नये प्रयोगों को, प्रक्रियाओं को अपनाती है और यह बात बार-बार ध्यान में आति है कि संवेदना से संवदनक्षम मन और जिसने गहरे संवेदनाओं की अनुभूति की है। वही लोग वही मन ऐसे कार्य कर सकते है। बस अनुभूति भी यह व्यक्ति निर्माण का ही उपकरण है। ■

(लेखक विद्यार्थी परिषद के क्षेत्रिय संगठन मंत्री है)

भारत की विरासत को आगे ले जाने के लिए परिषद् के कार्यकर्ता प्रतिबद्ध : सुबैय्या

अभाविप की राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद् बैठक(28-30 मई), गुवाहाटी में संपन्न

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् की तीन दिवसीय (28-30) राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद्, बैठक गुवाहाटी(असम) में सपंन्न हुई। कार्यकारी परिषद् में आये प्रतिनिधियों को संबोधित करते हुए अभाविप के राष्ट्रीय अध्यक्ष एस. सुबैय्या ने कहा कि भारत की विरासत को आगे ले जाने परिषद् का एक – एक कार्यकर्ता प्रतिबद्ध है और इस दिशा में कार्यकर्ता प्रयत्नशील हैं। उन्होंने तमिल कवि सुब्रमण्यम भारती की पंक्तियों को उद्धृत करते हुए कहा कि हजारों मंदिर बनवाने के पुण्य से करोड़ों गुणा अधिक पुण्य एक व्यक्ति को शिक्षा देकर उसका व्यक्तित्व का निर्माण करना है और अभाविप अपने स्थापना काल से ही व्यक्तित्व निर्माण का कार्य कर रही है। अभाविप केवल सबसे बड़ा छात्र संगठन नहीं बल्कि एक जीवंत संगठन भी है। परिषद् में कार्यकर्ताओं को पढ़ाई के साथ – साथ राष्ट्रीय पुनर्निर्माण की पाठ पढ़ाई जाती है, अभाविप की अनूठी कार्यपद्धति के कारण लोग इसे छात्र संगठन के बजाय सामाजिक संगठन मानने लगे हैं। परिषद् में कार्य कर निकले कार्यकर्ता आज समाज के विभिन्न क्षेत्रों में राष्ट्र के विकास के लिए अपना योगदान दे रहे हैं। परिषद् एक छात्र संगठन नहीं बल्कि व्यक्तित्व निर्माण की पाठशाला है।

अभाविप के राष्ट्रीय संगठन मंत्री सुनील आंबेकर ने कार्यकर्ताओं से विद्यार्थियों की समस्याओं के समाधान हेतु निरंतर प्रयत्नशीन रहने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि समरस समाज से ही सशक्त राष्ट्र का निर्माण हो पायेगा। समाज में समरसता का वातावरण निर्माण हो इस हेतु हम सभी को प्रयास करने होंगे। वहीं राष्ट्रीय महामंत्री आशीष चौहान ने विद्यार्थी परिषद् की वर्तमान में चल रही गतिविधियां एवं उनका स्वरूप सभी के सम्मुख रखा। उन्होंने कहा कि परिषद् के कार्यो का विस्तार तेजी से हो रहा है। राष्ट्र विरोधी ताकतों को परिषद् के कार्यकर्ताओं ने मुंहतोड़ जवाब दिया है। बैठक के पूर्व गुवाहाटी में आयोजित अभिनंदन समारोह में मुख्य अतिथि असम प्रदेश के पर्यावरण एवं वन, कर तथा मतस्य पालन मंत्री परिमल शुक्ला वैद्य थे। उन्होंने कहा कि भारत ही

एक मात्र ऐसा देश हैं जहां के निवासियों ने अत्याचार सहकर भी अपनी मातृभूमि के प्रति पुत्र समान, निष्ठा रखी है। इनलोगों के कारण ही ज्ञान-विज्ञान सहित अनेक क्षेत्रों में भारत ने उल्लेखनीय मार्गदर्शन किया है। अभाविप राष्ट्र के विचार के संवाहक के रूप में कार्य कर रही है। इस कार्यक्रम में प्रसिद्ध चिकित्सक एवं स्वागत समिति के अध्यक्ष डॉ. हितेन वरूआ एवं सचिव समाजसेवी मनोज सौफ उपस्थित थे। बता दें कि 27 मई को पूर्व कार्यकर्ता सम्मेलन का भी आयोजन किया गया था, जिसमें भारी संख्या में असम के पूर्व कार्यकर्ता मौजूद थे। कार्यकर्ताओं ने अपने परिषद् के कार्य के संस्मरण को साझा किया। पुरातन कार्यकर्ता सम्मेलन में विशेष रूप से राष्ट्रीय संगठन मंत्री सुनील आंबेकर एवं पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. नागेश ठाकुर थे।

बैठक में पूर्वोत्तर के विभिन्न राज्यों से गुवाहाटी में अध्ययनरत छात्र – छात्राओं का संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें राष्ट्रीय सह-संगठन मंत्री श्रीनिवास एवं प्रादेशिक विश्वविद्यालय कार्य प्रमुख श्रीहरि बोरिकर ने छात्रों से संवाद किया। तीन दिनों तक चले इस बैठक में छात्राओं की अधिकाधिक सहभागिता हेतु चर्चा हुई, जिसकी अध्यक्षता अभाविप के अ. भा. छात्रा प्रमुख ममता यादव ने की, उनके साथ केन्द्रीय कार्यसमिति सदस्य कु. मोनिका चौधरी भी थी। वहीं पूर्वोत्तर के विभिन्न छात्र संगठनों के प्रमुख नेताओं के साथ अनौपचारिक संवाद कार्यक्रम में राष्ट्रीय महामंत्री आशीष चौहान एवं प्रादेशिक विश्वविद्यालय कार्य प्रमुख श्रीहरि बोरिकर ने किया, इस दौरान पूर्वोत्तर के विभिन्न विषयों पर चर्चा की गई।

राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद् बैठक में पारित पांच प्रस्तावों के मुख्य बिंदु –

1. पारदर्शी और गुणवतापूर्ण हो शिक्षा व्यवस्था
2. विभाजनकारी राजनीति देश के विकास के लिए घातक
3. छात्रवृतियों का पुनर्मुल्यांकन एवं त्वरित निष्पादन – समय की मांग
4. नारी सम्मान के लिए निरंतर प्रयास आवश्यक
5. विकास के पथ पर गतिमान हो पूर्वोत्तर

राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद्, बैठक में देश भर के 307 पदाधिकारी उपस्थित थे। इस बैठक में मित्र संगठन प्राज्ञिक विद्यार्थी परिषद्, नेपाल से भी पांच पदाधिकारियों ने हिस्सा लिया। तीन दिनों चली इस बैठक में विभिन्न राष्ट्रीय, शैक्षिक और सामाजिक मुद्दों पर गहन चर्चा हुई और पांच प्रस्ताव पारित किये गये। इसके साथ ही अभाविप के कार्यविस्तार, संगठनात्मक इकाई, छात्रावास संपर्क- कार्य, छात्रा शिक्षा, पारदर्शी एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा व्यवस्था, विभाजन राजनीति, नारी सम्मान, पूर्वोत्तर के विकास, छात्रवृतियों का पुनर्मूल्यांकन एवं त्वरित निष्पादन – समय की मांग इत्यादि मुद्दे पर गहन चिंतन व मंथन किया गया। बैठक के दौरान देश भर में हुए अभाविप के कार्यक्रमों की जानकारी प्रस्तुत किये गये। बैठक का उदघाटन अभाविप के राष्ट्रीय अध्यक्ष एस. सुबैय्या, राष्ट्रीय महामंत्री आशीष चौहान एवं राष्ट्रीय संगठन मंत्री सुनील आंबेकर नें मां सरस्वती एवं स्वामी विवेकानंद की प्रतिमा पर पुष्प अर्जित एवं दीप प्रज्ज्वलित कर किया। समारोह में सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया था, जिसमें असम के लोक संगीतों पर बांसुरी वादन, प्रसिद्ध असमिया लोक नृत्य बीहू इत्यादि की विशेष प्रस्तुति हुई। ■

प्रिय मित्रों !

शिक्षा - क्षेत्र की प्रतिनिधि - पत्रिका के रूप में 'राष्ट्रीय छात्रशक्ति' का जून 2018 अंक आपके समक्ष प्रस्तुत हैं। यह अंक सामाजिक अनुभूति, शिक्षा, स्थापना दिवस आदि पर महत्वपूर्ण लेख राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद् बैठक की रिपोर्ट समेत विभिन्न समसामयिक घटनाक्रमों व खबरों को समाहित किए हुए हैं। आशा है, यह अंक आपके आवश्यकताओं के अनुरूप उपादेय साबित होगा। कृपया 'राष्ट्रीय छात्रशक्ति' से संबंधित अपने सुझाव व विचार हमें नीचे दिए गए संपादकीय कार्यालय के पते अथवा ई - मेल पर अवश्य भेजें : -

'राष्ट्रीय छात्रशक्ति'
26, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नयी दिल्ली - 110002.
फोन : 011-23216298
chhatrashakti.abvp@gmail.com
www.facebook.com/rashtriyachhatrashakti
www.twitter.com/chhatrashakti1

Srishti - 2018 : Innovation Exchange Held in Bengaluru

Srishti, is a platform to fulfil every engineer's dream of bringing ideas into reality. 16th year of Srishti was again a very successful one at Dayananda Sagar college of Engineering, Bengaluru from 22nd – 24th May 2018. Srishti proved being the podium for exchange of ideas. Over 1400 projects were registered out of which best 350 projects were exhibited.

Srishti 2018 took a grand start and the stalls were inaugurated by His excellency, Sri Vajubhai Rudabhai Vala, Governor of Karnataka. His excellency visited the stalls and also appreciated students on their innovativeness and efforts.

Inaugural session was presided over by His excellency, Sri Vajubhai Rudabhai Vala and was chaired by Mr. M. V. Gowtama, CMD, Bharat Electronics Limited, Dr. M.P.Poonia, Vice chairman, AICTE, Sri. Harsha Narayan, State secretary, ABVP, Karnataka, Sri Gali Swami, Secretary DSCE, Sri Janardhan, Pro vice chancellor, DSCE, Sri Guruprasad Kadagad, Convenor, Srishti, Sri Girish Badiger, Convenor, Srishti. Dignitaries appreciated the efforts of team Srishti.

Final year projects and projects under Avishkar were evaluated on day 2. Eminent resource persons from various esteemed institutions and research centres evaluated the projects based on the innovativeness, sustainability, cost effectiveness. On the other hand, Technical papers were presented and the best ideas were selected and awarded. many industrialists visited the stalls.

Various other activities took place on day 3, firstly many industrialists visited the stalls. Simultaneously various events of Art matters, Students for development and Think India happened. Art matters art gallery was inaugurated and various photographs and paintings were exhibited in the gallery, competitions like live painting, sculpture making, poster designing, print making were held and attracted the audiences too. It also included some art talks on photography, painting etc.

Students for development called upon students to exhibit or present ideas through working or static model on sustainability. Other competition includes Green script- Creative writing and green verses- board your poem. There were good literature works by the students on the same. Dialogue for development for sustainable urbanization was chaired by Sri Ramprasad, Sri Naveen Ramu , Sri Rajesh, Sri Mithun. The students interacted well on various issues like water, transportation, waste management etc, Think India organised series of short talks, KIN talks which covered aspects of Nationalism, spirituality, Water crisis, science and technology and a whole lot of interesting topics to present day relevance. Many renowned speakers interacted with students.

Srishti 2018 came to an end by the presence of Sri A. S Kiran Kumar, Former Chairman ISRO, M.

K Sridhar, Member Secretary New Education Policy, Dr Ramesh Unnikrishnan, Regional Director, SWR-AICTE, Mr.Janardhan, Pro Vice Chancellor, DSCE, Dr C.P.S Prakash, Principal DSCE, Dr Allama Prabhu Gudda, State President ABVP Karnataka , Sri Abhilash S Rao, Convenor Srishti, Sri Guruprasad Kadagad, Convenor Srishti, Sri Girish Badiger, Convenor Srishti for the valedictory.

Also, the best projects were awarded with trophies and cash prizes in all categories. Most innovative ideas were incubated further by the host institute in their incubation centre. Srishti 2018 was yet another successful event and added in golden letters to the achievements of ABVP. ■

व्यक्तित्व निर्माण की अनूठी पाठशाला

| अभिषेक रंजन |

मैं परिषद् का कार्यकर्त्ता हूं – यह वाक्य बोलते वक्त किसी भी विद्यार्थी के चेहरे का भाव देखने लायक होता है। इसमें विश्व के सबसे बड़े विद्यार्थी संगठन के कार्यकर्त्ता होने का बोध तो रहता ही है, यह वाक्य विद्यार्थी जीवन की उस पहचान से जुड़ा होता है, जो उसे बाकियों से अलग करती है। चाहे वह स्थान जेएनयू हो अथवा बीएचयू, कालाहांडी हो या कन्नूर, परिषद् कार्यकर्त्ता की पहचान एक ही होती है। यह पहचान ही उसे आपस में जोड़ती है और साथ मिलकर एक लक्ष्य लेकर कार्य करने को प्रेरित करती है। उसे छद्म नामों व संगठनों से जुड़े होने की आवश्यकता नही पड़ती, जैसा कि वामपंथी संगठनों में प्रायः देखने को मिलता है।

आखिर ये पहचान कौन सी है? वे कौन सी बातें है, जो परिषद् कार्यकर्त्ता कहलाने मात्र से ही अप्रत्यक्षतः बोध हो जाता है? परिषद् अपने कार्यकर्ताओं के बीच इस एकसमान पहचान को कैसे बना लेती है? कौन से पहलू हैं, जो परिषद् को बाकी संगठनों से अलग करते है? परिषद् कार्यकर्त्ता होने के अनुभव से जब उपरोक्त दोनों जिज्ञासाओं को शांत करने की चेष्टा करते है तो कई तरह की बातें मन में आती है।

नए कार्यकर्त्ता के लिए परिषद् की छवि शायद आन्दोलन या फिर छात्र राजनीति में सक्रिय संगठन के रूप में हो सकती है। वहीं पुराने कार्यकर्ताओं के मन में आज भी परिषद् व्यक्तित्व निर्माण की पाठशाला ही है, लेकिन समग्रता में परिषद् को जब एक कार्यकर्त्ता देखता है तो सबको एक ही स्वरुप दिखाई देता है कि परिषद् छात्रहित के साथ साथ देशहित में कार्य करने वाला प्रवाहमान संगठन है। वैचारिक रूप से अलग मत रखने वाले संगठन परिषद् से भले ही बाकी विषयों पर मतभिन्नता रखते हो, परिषद् की सांगठनिक क्षमता उनके लिए सदैव उल्लेख करने वाला विषय रहता है। समाज के बीच

परिषद् ने एक राष्ट्रभक्त संगठन के रूप में अपनी पहचान बनाने का कार्य किया है, जो परिषद् के कार्यकर्ताओं की तरफ सदैव आशाभरी निगाहों से देखता है। परिषद् ने अपनी अनूठी कार्य पद्धति एवं सांगठनिक क्षमता से समाज के एक बड़े वर्ग को अपना शुभचिंतक बनाया है, जो कार्यकर्ताओं के व्यवहार, वैचारिक प्रतिबद्धता एवं उनके रचनात्मक व आंदोलनात्मक कार्यों से बनी है।

1948 ई. से लेकर अबतक की अपनी यात्रा में परिषद् की पहचान उसके विचार, उस विचार के प्रति प्रतिबद्धता व प्रतिबद्धता के साथ किये गए कार्यों से बनी है। परिषद् ने लक्ष्य नही बदले, न ही संघर्षों के समय अथवा अनुकूलता की स्थिति में अपनी कार्यपद्धति से कोई समझौता किया। जैसे किसी संगठन का मिशन और विजन उसकी विशेषता होती है, परिषद् में भी यही देखने को मिलता है। स्थापना के समय परिषद् ने तय किया कि वह राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के व्यापक संदर्भ में शिक्षा में आदर्श छात्र आंदोलन खड़ा करने के उद्देश्य से कार्य करेगा। यह कार्य शिक्षा परिवार की सामूहिक शक्ति में विश्वास, रचनात्मक दृष्टिकोण से छात्रों का वैचारिक संवर्धन एवं सत्ता व दलगत राजनीति से परे रहकर राष्ट्रीय दृष्टिकोण को ध्यान में रखकर होगा। विद्यार्थी, शिक्षक, शिक्षकेत्तर कर्मचारी, सब एक परिवार के सदस्य के नाते कार्य करें, यह सोच परिषद् ने रखी, जो भारतीय संकल्पना के आधार पर शैक्षिक परिवार की व्यवहारिक व अनुकूल अवधारणा थी। बात छात्र आंदोलन की भी हुई तो ये आंदोलन विरोध के लिए विरोध करना नहीं बल्कि समाज परिवर्तन एवं विकास हेतु आंदोलन की बात कही गई, जो रचनात्मकता को समेटे हुई थी। एक दूसरे से लड़ाने वाली स्वार्थी राजनीति नही, राष्ट्रनीति अर्थात "देश पहले" के विचार से लोक शिक्षा, लोक सेवा व लोक संघर्ष का भाव रखते हुए कार्य करना परिषद् ने तय किया।

ज्ञान-शील-एकता के मंत्र को न केवल आत्मसात किया बल्कि इसके लिए विद्यार्थी परिषद् ने छात्र समुदाय व संगठन के दर्शन का भी विकास किया, जिसकी जड़ें भारतीय थीं तो वहीं लक्ष्य वैश्विक विचारों से परिपूर्ण था। "छात्र शक्ति- राष्ट्र शक्ति" हो अथवा "छात्र कल का नही आज का नागरिक है" जैसे दर्शन का विकास काफी चिंतन मनन व आधुनिक समय की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए हुआ। जहां साम्यवादी संगठन छात्रों की रचनात्मक ऊर्जा का बेजा इस्तेमाल कर रहे थे, वहीं परिषद् ने युवा तरुणाई की ऊर्जा को सकारात्मक दिशा देने की ठानी और देश के सामने आनेवाली चुनौतियों के समाधान के लिए उसे साध्य बनने को प्रेरित किया। जाति, पंथ, क्षेत्र, रंग, लिंग से परे एक राष्ट्र - एक पहचान का भाव परिषद् के विचारों व कार्यों में स्पष्ट परिलक्षित होता है।

परिषद् ने अपने मिशन पर केन्द्रित सोच के जरिये वैसे युवाओं की कई पीढियां तैयार की। परिषद् ने विश्व की प्राचीनतम सभ्यता, गौरवशाली इतिहास व श्रेष्ठ संस्कृति की पवित्र भूमि भारत को शक्तिशाली, समृद्धशाली व स्वाभिमानी राष्ट्र बनाने का संकल्प ले कार्य करने हेतु युवा मन को तैयार करने व अपनी अपनी भूमिका में इस लक्ष्य प्राप्ति की दिशा में अपने योगदान हेतु प्रेरित किया।

बात चाहे परिषद् के शैक्षिक कार्यों की हो अथवा सामाजिक कार्यों की, परिषद् का मिशन और विजन सदैव कार्यकर्ताओं के लिए आजीवन मार्गदर्शक बने रहते है। वह चाहे परिषद् का सक्रिय कार्यकर्त्ता बनकर रहे अथवा सामाजिक जीवन के किसी अन्यत्र क्षेत्र में जाकर कार्य करे, उसकी कार्य पद्धति में परिषद् का संस्कार स्वतः परिलक्षित होता रहता है। स्वदेशी का विचार हो या फिर राष्ट्रीय एकात्मता का भाव, परिषद् कार्यकर्त्ता के लिए आजीवन इसके लिए आग्रह बना रहता है। यह परिषद् की एक विशेष पहचान ही तो है।

सांगठनिक रूप से विद्यार्थी परिषद् ने राजनीतिक दलों के मुखौटे के रूप अपनी पहचान कभी नही बनने दी। यही वजह रही कि परिषद् ने अपनी एक अलग व गैरराजनीतिक पहचान बनाई। वैचारिक रूप से एक होने के बाद भी इसने किसी राजनीतिक दल के साथ अपनी पहचान को नही जोड़ा। भाजपा के छात्र संगठन के रूप में प्रचारित होने के बावजूद परिषद् ने अपनी परिधि को स्पष्ट रूप से परिभाषित किया और कार्यकर्ताओं के बीच भी इस संदेश को सदैव प्रमुखता से आत्मसात करने के लिए प्रेरित किया है कि हम दलगत राजनीति से परे होकर कार्य करने वाले संगठन है, जो राष्ट्र सर्वोपरि की सोच के साथ कार्य करता है।

विद्यार्थी परिषद् ने केवल सामाजिक-राजनीतिक दृष्टि से ही नही, व्यक्तिगत दृष्टि से भी कार्यकर्ताओं के विकास की अनूठी कार्यपद्धति विकसित की। अभ्यास वर्ग अथवा आंदोलन, सभी प्रमुख कार्यों में समानांतर प्रशिक्षण का भी कार्य चलता रहता है, जिस वजह से परिषद् की एक पहचान व्यक्तित्व निर्माण की पाठशाला के रूप में भी बनी है।

आज ऐसे समय में जब पर्सनालिटी डेवलपमेंट शब्द काफी लोकप्रिय होता जा रहा है, टीम लीडरशिप पर बड़े - बड़े शैक्षणिक संस्थान पाठ्यक्रम चला रहे हैं, इवेंट मैनेजमेंट व्यावसायिक दृष्टि से एक बड़ा क्षेत्र बन गया है, जिस पर केन्द्रित डिग्रियां लेने के लिए विद्यार्थी लाखों रुपए सहर्ष खर्च कर रहे है, परिषद् में ये सब स्वतः मिल जाती है। प्रेस विज्ञप्ति लिखनेवाला कार्यकर्त्ता कब लेखक और पत्रकार बन जाता है, छोटी सी जिम्मेवारी से कार्यक्रम संयोजक तक के दायित्व कब एक बेहतर आयोजक के रूप में किसी व्यक्ति को तब्दील कर देता है, पता नही चलता। बैठक से लेकर मंच संचालन तक के कार्य करते करते, कार्यसमिति के सदस्य से लेकर महामंत्री तक के दायित्व पर कार्य कर चुके कार्यकर्त्ता की जीवन यात्रा को देखें तो आपको व्यक्तित्व निर्माण की अभिनव कहानी ध्यान में आती है। संगठन की शक्ति को समझना, व्यक्तिगत संबंध के जरिये किसी उद्देश्य से जोड़ना और सामूहिक शक्ति से किसी लक्ष्य को प्राप्त करना, ये कुछ ऐसे गुण है जो परिषद् में कार्य करने वाले कार्यकर्ताओं में स्वतः समाहित हो जाता है।

सामाजिक समरसता पर केन्द्रित कार्यों ने परिषद् की सर्वग्राही व सर्वव्यापी पहचान बनाने में बड़ा योगदान निभाया है. "परं वैभवं नेतुमेतत स्वराष्ट्रम" का मिशन "हिन्दव सोदराः सर्वे न हिन्दू पतितो भवेत" की सोच व "सब भारतीय है" और "सब मिलकर इस देश को महान बनाएंगे" के विचार लेकर समाज के हर वर्ग के बीच परिषद् कार्य का विस्तार हुआ है। आरक्षण से लेकर जनजाति विषयों को लेकर परिषद् ने राष्ट्रीय दृष्टिकोण को सदैव प्राथमिकता दी। इसी वजह से परिषद् का परिचय किसी खास समूह के विद्यार्थियों के संगठन की कभी नही बनी। आज देश के सभी हिस्सों में सभी वर्गों के बीच परिषद् का कार्य है।

परिषद् ने देश के संवेदनशील मुद्दों को लेकर भी न केवल देश का ध्यान आकृष्ट करवाया बल्कि नीति नियंताओं को भी कई फैसले लेने को मजबूर किया। चाहे असम का आन्दोलन हो या फिर आपातकाल के विरुद्ध संघर्ष, बंगलादेशी घुसपैठ का विषय हो अथवा शिक्षा के व्यवसायीकरण, परिषद् सत्ता की जनविरोधी नीतियों, भ्रष्टाचार, राष्ट्रीय सुरक्षा के सवालों को लेकर सदैव मुखर रही है। वहीं दूसरी ओर नीति-निर्माण से जुड़े विषयों को लेकर संवेदनशील बनाने हेतु थिंक इंडिया, रचनात्मक कार्यों हेतु विकासार्थ विद्यार्थी(SFD), उत्तर पूर्वी राज्यों की संस्कृति से देश के बाकी हिस्सों को परिचित कराने के लिए अंतर्राज्यीय छात्र जीवन दर्शन (SEIL) प्रकल्प, तकनीकी विद्यार्थी के बीच टीएसवीपि, मेडिकल विद्यार्थियों के बीच मेडीविजन आदि प्रकल्पों के जरिये न केवल युवा प्रतिभाओं को जोड़ा बल्कि उन्हें रचनात्मक मंच मुहैया कराकर सामाजिक जीवन जीने की एक व्यापक दृष्टि भी दी। विविध क्षेत्रों में अलग-अलग कार्यों के बावजूद एक लक्ष्य लेकर परिषद् ने कार्य खड़ा किया, यह विशेष पहचान भी विश्व के छात्र संगठन में विरले ही देखने को मिलती है।

आज जब भी परिषद् के कार्यों के परिणाम की बात होती है, तो वे तमाम आंदोलन, रचनात्मक गतिविधियां ध्यान में आती है, जिसने देश की युवा पीढ़ी को नई राह दिखाई, कई ज्वलंत समस्याओं को लेकर जनसामान्य को जागृत किया, अपनी रचनात्मक भूमिका से कई चुनौतियों से निबटने में सहायता की। उन कार्यकर्ताओं के नाम बड़े गर्व के साथ गिनाये जाते हैं जिन्होंने राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक जीवन के विविध कार्यों में न केवल अपनी पहचान बनाई बल्कि उनके योगदान देश व समाज को काफी लाभ भी हुआ है। परिषद् ने अपनी पहचान छात्र संगठन के नाते तो बनाई ही है, इसने समाज को समर्पित व कर्तव्यनिष्ठ नागरिक गढ़ने वाले संगठन के रूप में भी बनाई है, जहां कार्यकर्त्ता देशहित जीने के विचार से जुड़ते है और आजीवन उस विचार के साए में एक भव्य और स्वामी विवेकानंद के स्वप्नों के समृद्ध भारत का संकल्प लिए अपना योगदान देने की कोशिश करते है। यही तो परिषद् की पहचान है। ■

पर्यावरण सरंक्षण के लिए आगे आयें युवा: आदित्य

पर्यावरण संरक्षण को लेकर विकासार्थ विद्यार्थी (एसएफडी) के द्वारा लगातार जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। जल, जंगल, जमीन, जन एवं जानवर की रक्षा करना एसएफडी के मुख्य उद्देश्य एजेंडे में शामिल है। शिमला में प्लास्टिक के पहाड़ का खात्मा करना हो या छत्तीसगढ़ में तालाब खोदो अभियान के तहत तालाबों को पुर्नजीवित व संरक्षित करने की बात हो, एसएफडी के कार्यकर्ता सदैव प्रकृति की रक्षा के लिए तत्पर है। एसएफडी के प्रयास से ही नर्मदा बचाओ अभियान ने जन-आंदोलन का रूप लिया, परिणामस्वरूप मध्यप्रदेश सरकार का ध्यान नर्मदा की ओर गया और मां नर्मदा की सफाई संभव हो पायी। पिछले साल दिल्ली में ऊर्जा बचाओं अभियान के तहत लाखों यूनिट बिजली की खपत बचाई गई। इस वर्ष दिल्ली प्रांत एसएफडी के द्वारा दिल्ली की सभी झीलों को पुर्नजीवित करने की योजना बनाई गई है। इसी योजना के तहत रोहिणी के भलस्वा झील की सफाई को लेकर जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। पर्यावरण के लिए युवाओं को आगे आना होना होगा तभी प्रकृति की रक्षा संभव हो पायेगी। ये बातें अभाविप के प्रकल्प विकासार्थ विद्यार्थी(एसएफडी) के राष्ट्रीय संयोजक आदित्य ने कहीं।

गौरतलब है कि दिल्ली के रोहिणी में स्थित भलस्वा झील की सफाई को लेकर एसएफडी के द्वारा सफाई अभियान चलाया जा रहा है। यह झील सरकार एवं स्थानीय लोगों की उदासीनता के कारण काफी गंदा हो चुकी है, कभी इस झील में लोग स्नान करते थे, आज आलम यह है कि यहां पर आकर सांस लेना मुश्किल है। आदित्य ने बताया कि अगर इस झील की सफाई कर दी जाई एवं लगातार साफ सफाई पर ध्यान दिया जाय तो पर्यटन के दृष्टिकोण से यह झील मनोरम स्थल हो सकता है। पर्यटन के बढ़ने से स्थानीय लोगों के लिए रोजगार का सृजन हो सकता है। भलस्वा एक प्राकृतिक झील है, कभी यहां सैलानियों का जमावड़ा हुआ करता था। इस झील को पुर्नजीवित करने के लिए एसएफडी के कार्यकर्ता कृतसंकल्प है। उन्होंने बताया कि विश्व पर्यावरण दिवस के मौके पर भलस्वा झील को साफ करने के लिए हवन का आयोजन किया गया था, जिसमें स्थानीय लोगों ने बढ़ - चढ कर हिस्सा लिया। दिल्ली के प्रांत सह प्रमुख आशीष पोखरीयाल ने बताया कि भलस्वा झील के पुरानी सुंदरता को वापस लाने के लिए एसएफडी के कार्यकर्ता खुद सफाई करने में जुट चुके हैं। इस अभियान में हमलोगों को स्थानीय निवासी, स्वयंसेवी संगठनों इत्यादि का खुल कर साथ मिल रहा है। झील की सफाई होने के बाद यहां के युवाओं के लिए रोजगार के अवसर भी खुलेगें साथ ही आस - पास का जलस्तर भी सुधरेगा। इस मौके पर दिल्ली विश्वविद्यालय की प्राध्यापिका मनु शर्मा कटारिया ने भी उपस्थित लोगों से भलस्वा झील को बचाने की अपील की। मौके पर एसएफडी के विभाग संयोजक दिव्यांशु, सह संयोजक शुभम मिश्रा के अलावा बड़ी संख्या में स्थानीय लोग, समाजसेवी, स्वयंसेवी संगठनों के कार्यकर्ता उपस्थित थे। ■

Sensitizing with Education

Prof. Sanjeev Kumar Sharma

Education is normally perceived as a pre-requisite to freedom these days. Some of our friends in the academia have been insisting upon education being the only provider of public good. Some have been suggesting that the spread of education can eliminate almost all major social and economics problems of our political community. The argument is that if we educate people they will gain greater awareness about their rights and then demand from the state in accordance with their understanding of the things and this may, in turn, lead to increased sense of responsibility among the political class and lessening corruption. Inefficiency in the part of executive will also decrease and in result, the social evils will essentially give way to modern secularized method of living and economics prosperity would necessarily follow. The argument dwells upon the accepted predominance of educated masses. The feeling appears to be towards procuring better life for all the citizens through wide spread educational proliferation, which has in some cases paved the way of very enthusiastic government planning and schemes like 'Sarva Shiksha Abhiyan'. And the corollary of this argument is that education is the panacea; solution tio every problem; the torchbearer of development and so on. Apparently, the argument seems quite promising and thereby, easily acceptable to all. But experiences put forth some apprehensions that may be translated as queries. Let us take one simple example of castes system in India. We many agree that the expansion of education loosens of Sanskritization finally assimilates all the coherent modernized group communities. This means that caste consciousness among people with greater educational input will definitely be lesser as compared to those with lesser or no educational input at all. But the political scenario of last two decades reveals that this has not happened. And unfortunately proves that this has turned the other example . In this case also the religious fanaticism is greater in people with greater educational input, which they disseminate through both traditional and modern means of communication amongst the lesser-educated people. We may take another example. The essence of this argument is not to lower down the importance of the proliferation of education but to bring to notice that ironically, the present education system has not been able to provide us with less communal, less corrupt, less casteist or less fanatic citizenry. This means that there is something seriously wrong with our

educational system and we must take note of our output in terms of producing good citizens. The big question is that despite our tall claims of producing a large number of educators, communicators, engineers, doctors, advocates, and so on, have we really been able to produce truthful, dedicated, honest, dutiful and visionary people with educational excellence? Has our educational system been able to improve the living conditions of the villagers of even one single village of the country? Have our educational institutions been successful in producing people with original Indian thinking?

Have our colleagues in academia ever attempted to come with indigenous ideas and clear-cut programmes of action for socio-political menaces of poverty, dowry, population explosion, etc. This should not be construed as an argument refuting the multi-dimensional progress of our socio-political community coupled with economic and educational growth. But the fact of the matter is that our present educational system has not endeavoured to full-fill the dreams of common man, which have been equally shattered by our political class. The end product of educational proliferation is, therefore, the increase in the number of the people with educational exposure and the decrease in the number of people with conviction and integrity. Our highly educated class has developed a strange sense of apathy towards political life which, in turn, has given way to the people with lesser understanding managing the entire game of politics resulting in diminishing efficiency of our democratic institution. This means that educational system has not complimented democratic way of life. This scenario is grim and requires serious attention of all the concerned. The main objective of our ancient treatises proclaim. ■

(Author is a Professor at Meerut University)

प्रकृति एवं समाज पर केन्द्रित कविता संग्रह 'चुप नहीं बैठुंगा' का विमोचन

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के प्रांत उपाध्यक्ष राजेन्द्र गौड़ के द्वारा प्रकृति एवं सामाजिक विषमताओं पर केन्द्रित कविता संग्रह 'चुप नहीं बैठुंगा' का विमोचन अभाविप के तत्त्वाधान में नयापुरा, कोटा में किया गया। कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि अभाविप के राष्ट्रीय सह-संगठन मंत्री श्रीनिवास एवं विशिष्ट अतिथि वरिष्ठ राजस्थानी गीतकार मुकट मणिराज व युवा कवि एवं लेखक डॉ. ओम नागर थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता साहित्याकार अरविंद सोरल कर रहे थे।

विमोचन के मौके पर अभाविप के राष्ट्रीय सह-संगठन मंत्री व मुख्य अतिथि श्रीनिवास ने कहा कि हम भले ही किसी भी विचार के साथ जुड़े हों लेकिन राष्ट्र और राष्ट्रहित सर्वोपरि होनी चाहिए। वहीं ओम नागर ने कहा कि मनुष्यता को बचाने की जद्दोजहद में कविताएं रचने वाले कवि राजेन्द्र गौड़ अपनी कविता में सृष्टि के मूल तत्त्वों को सहेजने का सार्थक संदेश भी देते हैं। जबकि विशिष्ट अतिथि गीतकार मुकुट मणिराज ने कहा कि युवा पीढ़ी में रचनाधर्मिता के प्रति ईमानदारी से सुखद भविष्य की आशा जागना लाजिमी है। अरविन्द सोरल ने कहा कि कविता शोषितों, वंचितों, गरीबों के संघर्ष की हितैषी है। वैचारिक निष्ठा के बावजूद कलम कुंद नहीं हुई। पुस्तक पर चर्चा करते हुए वरिष्ठ साहित्यकार व समीक्षक भगवती प्रसाद गौतम ने कहा कि कवि गौड़ अपने काव्य संग्रह चुप नहीं बैठुंगा की कविताओं में मानवता को बचानें की बात कहीं गई है। कार्यक्रम में साढ़े तीन सौ से अधिक कवियों, लेखकों, साहित्याकारों, समाजसेवियों व विद्यार्थी परिषद् के कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। कार्यक्रम की शुरूआत मां सरस्वती व विवेकानंद के चित्र के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन के बाद अंता से आए कवि विष्णु विश्वास की सरस्वती वंदना से हुआ। तत्पश्चात कार्यक्रम संयोजक प्रकाश जायसवाल नें सभी अतिथियों को माल्यार्पित कर स्मृतचिह्न भेंट किये इसके बाद पुस्तक का विमोचन किया गया। ■

भारत कोई भूमि का टुकड़ा नहीं: श्रीनिवास

दीनदयाल उपाध्याय विश्वविद्यालय, गोरखपुर में राष्ट्रवाद पर आयोजित कार्यशाला संपन्न

भारत राष्ट्र प्रकृति प्रदत्त है, किसी मनुष्य द्वारा बनाया गया या परिस्थिति विशेष के कारण बना राष्ट्र नहीं है और इसका उद्देश्य जगती का कल्याण करना है। भारत राष्ट्र का चिंतन है – सर्वे भवंतु सुखिनः सर्वे संतु निरामया; अर्थात सभी सुखी रहें, सभी निरोग रहें। इसके पीछे के मूल को यदि समझने का प्रयास किया जाए तो इसका एक मात्र कारण है सांस्कृतिक विरासत। यह भारत की संस्कृति की विशेषता ही है कि भारत को मां के रूप में स्वीकार किया है। यदि भारत से मां शब्द को अलग कर दिया जाय तो भारत मात्र एक जमीन का टुकड़ा रह जाएगा और उसके प्रति त्याग व सम्मान का भाव खत्म हो जायेगा। ये बातें अभाविप के राष्ट्रीय सह-संगठन मंत्री श्रीनिवास ने कहीं। वे दीन दयाल उपाध्याय विश्वविद्यालय गोरखपुर द्वारा आयोजित 'देश की एकता एवं अखंडता में राष्ट्रवाद की भूमिका' विषय पर छात्रों को संबोधित कर रहे थे।

व्याख्यान के दौरान अभाविप के राष्ट्रीय सह-संगठन मंत्री श्रीनिवास ने कहा कि दुनिया के राष्ट्र किसी विशेष भाषा के आधार पर, कबीलाई संघर्ष के आधार पर, चर्च या किसी पूजागृह के आधार पर, वहां की लोक परंपरा या भूगोल के आधार पर बने हैं किंतु भारत अनेकों प्रकार की भाषा, वेशभूषा, खानपान, लोक परंपरा व पूजा पद्धितियों को समायोजित किये हुए है। विविधता में एकता भारत की विशेषता है। भारत की विशेषताओं को रेखांकित करते हुए उन्होंने कहा कि 'मिश्र, रोमा मिट गये इस जहां से, कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी' यानि हजारों वर्षों की गुलामी के बावजूद भारत ने अपनी संस्कृति को नहीं खोया, मिस्त्र, रोम आज भी है लेकिन उसकी संस्कृति खत्म हो गई यानि इन देशों ने अपने अस्तित्व को खो दिया। कोई भी राष्ट्र अपनी संस्कृति के लिए जाना जाता है, हरेक राष्ट्र की अपनी सांस्कृतिक पहचान होती है और भारत अपनी संस्कृति के लिए जाना जाता है। उन्होंने उपस्थित युवाओं से भारतीय संस्कृति को अक्षुण्ण बनाये रखने की अपील की।

संगोष्ठी की अध्यक्षता कर रहे विश्वविद्यालय के कुलपति विजय कृष्ण सिंह ने कहा कि कुलपति ने कहा कि राष्ट्र सेवा से बढ़कर कोई धर्म नहीं है, राष्ट्र सेवा के लिए अभाविप ने छात्रों में राष्ट्रभावना को जागृत करने का काम किया जो काफी प्रशंसनीय है। वहीं समाज शास्त्र के विभागाध्यक्ष प्रो. मानवेन्द्र सिंह ने राष्ट्र एवं पाश्चात अवधारणाओं के मूलभूत तुलनात्मक अध्ययन की विवेचना को छात्रों के बीच रखा। उन्होंने कहा कि जहां पाश्चात्य संस्कृति राष्ट्र एक राजनीतिक इकाई के रूप में 17 वीं – 18 वीं शताब्दी में उदबोधित हुआ वहीं भारत की चिंतन धारा में राष्ट्र की अवधारणा एक सांस्कृतिक अर्न्तनिहित भावना के रूप में रही है।

संगोष्ठी के दौरान कुलपति विजय कृष्ण सिंह एवं विश्वविद्यालय के छात्र कल्याण अधिष्ठाता रविशंकर सिंह के द्वारा नूतन छात्रों, संकाय अध्यक्षों, विभागाध्यक्षों, वरिष्ठ प्राध्यापकों एवं विश्वविद्यालय परिसर में नवनियुक्त प्राध्यापकों तथा कर्मचारियों को सम्मानित किया गया। संगोष्ठी में हजारों छात्र-छात्राएं, शिक्षक एवं अभाविप के कार्यकर्ता मौजूद थे। ■

अभाविप, बिहार द्वारा 'व्यक्तित्व विकास शिविर' का आयोजन

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद्, बिहार प्रांत के द्वारा छात्रों की बौद्धिक, मानसिक व नेतृत्व क्षमता को बढ़ाने के लिए ग्रीष्मकालीन "व्यक्तित्व विकास शिविर" का आयोजन किया गया है। शिविर के उदघाटन समारोह को संबोधित करते हुए सुपर 30 के संस्थापक आनंद कुमार ने कहा कि वर्तमान समय में विद्यार्थियों को अपने करियर के प्रति दृढ़ संकल्पित होकर अपने लक्ष्यों की ओर बढ़ना होगा। विद्यार्थी परिषद् द्वारा ग्रीष्मकालीन में आयोजित यह व्यक्तितव विकास शिविर छात्र-छात्राओं के लिए उचित मार्गदर्शन का केन्द्र बनेगा। छात्राएं आज देश के हर क्षेत्रों में परचम लहरा रही है, परिषद् द्वारा आयोजित यह कार्यक्रम एवं "मिशन साहसी" मील का पत्थर साबित होगा।

वहीं मुख्य अतिथि दूरदर्शन के निदेशक डॉ. पी.एन.सिंह ने कहा कि अभाविप का यह कार्यक्रम बहुत ही सराहनीय है। परिषद् द्वारा आयोजित व्यक्तित्व विकास शिविर में आने से छात्र-छात्राओं के बीच हमें भी अपने कार्य के प्रति ऊर्जा प्राप्त होती है। विद्यार्थी परिषद् द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम से साबित होता है कि परिषद् आज सिर्फ कॉलेजों में ही नहीं अपितु समाज के हर क्षेत्रों में अपने रचनात्मक कार्यों के बदौलत विश्व के सबसे बड़े छात्र संगठन होने का गौरव प्राप्त किया है। जबकि पटना विश्वविद्यालय के डीन प्रो. एन.के. झा ने कहा कि विद्यार्थी परिषद् कई वर्षों से छात्र-छात्राओं के व्यक्तित्व एवं बौद्धिक विकास हेतु लगातार प्रयासरत है।

अभाविप के प्रांत संगठन मंत्री अनिल दुबे ने कहा कि परिषद् अपने कई प्रकार के रचनात्मक कार्यक्रम के माध्यम से छात्र-छात्राओं सहित युवावर्ग में संस्कार, देशभक्ति एवं समाज के प्रति जागरूकता के भाव से ओत-प्रोत कर रहा है। पटना विश्वविद्यालय के सिनेटर पप्पु वर्मा ने कहा कि व्यक्तित्व विकास शिविर के माध्यम से कई विषयों के विशेषज्ञों को परिषद् द्वारा आमंत्रित कर छात्र-छात्राओं के व्यक्तित्व को निखारा जायेगा। शिविर का उदघाटन पटना सायंस कॉलेज के रसायन शास्त्र विभाग में सुपर 30 के संस्थापक आंनद कुमार, दूरदर्शन के निदेशक डॉ. पी.एन.सिंह, अभाविप के प्रांत संगठन मंत्री अनिल दुबे, पटना विश्वविद्यालय के डीन प्रो. एन.के. झा, सिनेटर पप्पू वर्मा, डॉ. एस.के. चौधरी व सामाजिक कार्यकर्ता अजय यादव द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया।

कार्यक्रम में राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य गौरव प्रकाश, थिंक इंडिया के राष्ट्रीय संयोजक गौरव सुन्दरम, प्रदेश कार्यकारी सदस्य कौशल मिश्रा, समेत अनेकों कार्यकर्ता मौजूद थे। कार्यक्रम के दौरान मंच संचालन छात्रनेता मणिकंतमणी व धन्यवाद ज्ञापन जिला संयोजक अमित मिश्रा ने किया। ■

देश में प्रजातंत्र है या सामंतशाही

।कर्नल शिवदान सिंह।

देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने कर्नाटक के चुनाव प्रचार के दौरान एक बार फिर देश में प्रजातंत्र के नाम पर सामंतशाही चलाने वाले कुछ राजनैतिक घरानों के काले सच को उजागर करते हुए कहा कि देश की राजनीति में नामदार और कामदार, दो वर्ग के लोग सक्रिय हैं। नामदार से तात्पर्य है वंशवाद के नाम पर चुनाव लड़ना तथा वोट मांगना। प्रधानमंत्री के विचार ठोस सबूतों पर आधारित होते हैं इसलिए देश के बुद्धिजीवियों को गम्भीरता से विचार करना चाहिए कि क्या देश में पश्चिमी देशों जैसा प्रजातंत्र है। परन्तु अब तक के ज्यादातर सत्ता परिवर्तन वंशवाद के आधार पर ही होते नजर आये हैं। 1984 में श्रीमती इंदिरा गांधी की हत्या हो गयी। हत्या के बाद पूरे देश में चर्चा थी कि कांग्रेस के वरिष्ठ नेता प्रणव मुखर्जी को प्रधानमंत्री बनाया जायेगा परन्तु अचानक राजनीति तथा व्यवस्था से दूर एक कामर्शियल पायलेट राजीव गांधी को देश का प्रधानमंत्री पद केवल इसलिए दे दिया गया क्योकि वे नेहरू गांधी परिवार से तथा इंदिराजी के पुत्र थे।

वंशवाद तथा सामंतशाही की पराकाष्ठा तो तब हुई जब जुलाई 1997 में बिहार के मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव को चारा घोटाले में लिप्त होने के कारण जेल जाना पड़ा तो उन्होंने अपनी पार्टी के वरिष्ठ नेताओं की अनदेखी करके अपनी घरेलू तथा अल्पशिक्षित पत्नी राबड़ी देवी को बिहार जैसे राज्य का मुख्यमंत्री बना दिया जहां पर चारों तरफ कानून व्यवस्था, तथा गरीबी की समस्याएं हैं। इसी क्रम में 2012 के उ0प्र0 विधानसभा चुनावों में खूब चर्चा चली कि यदि पार्टी चुनावों में विजयी रही तो मुसलमानों का हितैषी कहाने वाली समाजवादी पार्टी किसी मुस्लिम को ही उ0प्र0 का मुख्यमंत्री बनायेगी। परन्तु इस सबको तथा पार्टी के वरिष्ठ नेता, शिवपाल सिंह यादव तक को दरकिनार करके नेताजी मुलायम सिंह यादव ने अपने 38 वर्षीय पुत्र अखिलेश यादव को मुख्यमंत्री बना दिया। उसके बाद यादव परिवार की आपसी कलह को उ0प्र0 की जनता ने उस प्रकार झेला जैसे राजा महाराजाओं के समय में महलों में हुआ करता था। इसी प्रकार बिहार में लालू जी ने एक बार फिर वंशवाद के क्रम में अपने दोनों पुत्रों को नीतिश मंत्रिमंडल में मंत्री पद दिलवाकर अपने 26 वर्षीय पुत्र को प्रदेश का उपमुख्यमंत्री बनवा दिया। क्या ये प्रजातांत्रिक प्रणाली के अनुसार उचित था या यह साफ साफ सामंती व्यवस्था में राजा के पुत्र का राजा बनने के उदाहरण नहीं थे।

क्या ऐसा ब्रिटेन, अमेरिका, फ्रांस, जापान तथा पश्चिम के अन्य देशों में संभव था। 1947 में देश को स्वतंत्रता तो मिल गयी परन्तु 900 साल की गुलामी के दौरान विकसित सामंती तथा वंशवाद वाली सोच के कारण देश को सामंती प्रजातंत्र ही प्राप्त हुआ। आज के प्रजातंत्र में भी सामंती युग के जागीरदार, तालुकदार, बदले स्वरूप में मौजूद हैं। इसका मुख्य कारण है गुलामी की मानसिकता से ग्रसित समाज हमेशा अनजाने डर जैसे रोजी रोटी, सुरक्षा इत्यादि से डर कर समूह या झुंडों में रहना पसन्द करता है और ये झुंड है जात-पात तथा सम्प्रदायों के आधार पर निर्मित झुंड जिनको वोट बैंक भी कहा जाता है। इन वोट बैंकों के ही सामंत आज के युग में सत्ता के जागीरदार हैं।

देश में आजादी के बाद संविधान निर्माताओं का मुख्य उद्देश्य था देश को एक उदार तथा जनकल्याणकारी संविधान देना जिसमें समाज के हर वर्ग को उचित न्याय तथा विकास का अवसर मिले। इसलिए विश्व के विभिन्न देशों जैसे ब्रिटेन से पार्लियामेंट्री व्यवस्था तथा स्वतंत्र न्यायपालिका, अमेरिका से नागरिकों के मौलिक अधिकार तथा स्काटलैंड से संविधान के सिद्धांत अपनाये गये। इस मिलेजुले संविधान में जहां उदारता तथा कल्याण की भावना है वहीं पर इसके स्वरूप को तोड़ने मरोड़ने के अवसर भी। इसी का फायदा उठाकर इंदिराजी ने 1975 में इलाहाबाद न्यायालय का अपने विरूद्ध फैसला आते ही देश में इमरजैंसी की घोषणा करके संविधान को ही स्थगित कर दिया। इस समय देश की जनता मुद्रा स्फीति की बढ़ती दर के कारण बढ़ी मंहगाई, अनाज तथा खाद्य पदार्थों की कमी तथा जगह जगह समस्याओं के कारण हड़तालों जिनमें 1975 में रेलकर्मियों की हड़ताल प्रमुख थी के कारण दिगभ्रमित थी। ऐसे वातावरण में इमरजैंसी के कारण मौलिक अधिकार भी छिन गये। इस कारण एक बार फिर देश को अंग्रेजी शासन की याद ताजा हो गयी। स्वतंत्रता संग्राम

की तरह एक बार फिर देश के युवाओं को इमरजैंसी के विरूद्ध लड़कर देश की राजनीति में अपना स्थान बनाने का मौका मिल गया। लोकनायक जयप्रकाश ने आपातकाल के विरूद्ध अभियान छेड़ा जिसे गुजरात से लेकर बिहार तक के छात्र तथा युवा नेताओं ने सहारा दिया। जयप्रकाश जी का अभियान सफल रहा और ये युवा भी राजनीति में स्थापित हो गये इनमें बिहार में नीतिश कुमार, लालू प्रसाद यादव, उ0प्र0 में मुलायम सिंह यादव, हरियाणा में चौधरी देवी लाल का परिवार तथा पंजाब में प्रकाश सिंह बादल इत्यादि प्रमुख रहे। इमरजैंसी ने भारत की राजनीति का पूरा स्वरूप बदल दिया जिसके कारण अंग्रेजी शासन के समय से चले आ रहे वयोवृद्ध नेताओं के स्थान पर युवा नेताओं ने देश की राजनीति संभाल ली। इन नेताओं ने वोट बैंकों पर पकड़ मजबूत करने के लिए सामंती सोच के अनुसार जात-पात जैसे अनुसूचित जाति, पिछड़ा वर्ग, तथा हिन्दू-मुस्लिम जैसे मुद्दों को हवा देकर अपने आपको वर्ग विशेष का हितैषी दिखाकर उनके वोट बैंकों पर कब्जा किया।

देश में खुलेआम हर स्तर पर भृष्टाचार तथा घोटालों का बोल - बाला रहा। सरकारी नौकरियां चहेतों को बांटी गयी तथा जनकल्याण की योजनाओं में बड़े बड़े घोटाले किये गये जिनमें सत्तादल के प्रभावशाली नेताओं तथा नौकरशाहों के नाम जांचों में सामने आ रहे हैं। उ0प्र0 लोक सेवा आयोग का भर्ती घोटाला, म0प्र0 का व्यापम तथा हरियाणा का अध्यापक भर्ती घोटाले इस तथ्य के प्रमाण हैं कि कितने बड़े स्तर पर राजनेताओं तथा नौकरशाहों ने देश की जनता को उनके न्याय संगत अधिकारों तथा अवसरों से वंचित किया। इस कारण आज युवाओं में असंतोष तथा बैचेनी देखी जा सकती है। बहुत से नेताओं जैसे उ0प्र0 के मुलायम सिंह यादव, मायावती तथा पंजाब के प्रकाशसिंह बादल इत्यादि के विरूद्ध आय से अधिक सम्पत्ति के प्रकरण देश की उच्चतम न्यायालय में लंबित हैं। देश के विभिन्न राज्यों के नेताओं तथा उनके केडरों द्वारा किये गये घोटाले तथा भ्रष्टाचार यह दर्शाने के लिए काफी हैं कि क्या देश में वास्तव में प्रजातंत्र है।

देश में प्रजातंत्र को इस स्थिति में पहुंचाने में देश के शासन की मुख्य धुरी नौकरशाही तथा पुलिस व्यवस्था का बहुत बड़ा हाथ है। अक्सर ये दोनों सत्ताधारी राजनेताओं को भ्रष्टाचार तथा आपराधिक गतिविधियों से रोकने के स्थान पर और उन्हें प्रेरित करते देखे गये हैं। उ0प्र0 के ग्रामीण स्वास्थ्य योजना तथा लोक सेवा आयोग का भर्ती घोटाला तथा केन्द्र के कोयला खदान घोटाले इसके प्रमाण हैं। उन्नाव बलात्कार कांड तथा बिहार में सैय्यद शहाबुद्दीन तथा उ0प्र0 के मुख्तार अंसारी को समय पर पुलिस ने कानून के शिकंजे में ले लिया होता तो ये इतने बड़े अपराध नहीं कर सकते थे। इसके मूल में अंग्रेजों द्वारा लागू 1919 का सिविल सेवा कोड तथा 1861 का पुलिस एक्ट है। 1947 में तत्कालीन गृहमंत्री सरदार पटेल ने इन दोनों एक्टों को इसलिए अपना लिया था कि इनके द्वारा अंग्रेजों ने सफलतापूर्वक भारत पर राज किया था जबकि उस समय बहुत से राजनीतिज्ञों एवं विशेषज्ञों ने इन एक्टों का विरोध किया था। विशेषज्ञों के अनुसार इन एक्टों ने एक गुलाम देश भारत पर सामंती प्रथा के अनुसार शासन करने में अंग्रेजी शासकों की मदद की थी। जबकि भारत एक स्वतंत्र प्रजातंत्र है जिसमें शासन के इन दोनों अंगों पुलिस तथा नौकरशाही को शासकों के साथ साथ देश की जनता के प्रति भी जबावदार होना चाहिए। परन्तु मौजूदा स्थिति में 1861 के पुलिस एक्ट के अनुसार प्रदेश की सरकार को नियुक्ति, रखरखाव तथा पुलिस कर्मियों के तबादलों तथा समस्त क्रियाकलापों पर पूरा नियंत्रण है और इसी प्रकार 1919 का सिविल कोड है जिसका नाम बदल कर सिविल कोड 1947 कर दिया गया था। इस स्थिति में सत्ताधारी दल के राजनीतिज्ञ तथा पार्टी कैडर इन दोनों को डरा धमकाकर अक्सर भृष्टाचार तथा संगठित अपराध करके जनता को आतंकित करते हैं। तब इस स्थिति में क्या पश्चिमी देशों की तरह एक स्वस्थ तथा जनता की सरकार की कल्पना की जा सकती है। क्या भारत की पुलिस तथा नौकरशाही को जनता का सेवक बुलाया जा सकता है। अक्सर सामंती या अधिकनायकवादी सरकारों के स्वरूप को पहचान कर जनता उनके जुल्मों सितम के लिए तैयार रहती है परन्तु हमारे देश में सामंती प्रजातंत्र में कुछ भी कह पाना मुश्किल होता है। सरकारें तरह तरह की कल्याणकारी योजनाओं की घोषणा करती है परन्तु क्या इनका लाभ जनता तक समान रूप से पहुंच पाता है। अपराधों से पीड़ित पुलिस के पास जाते हैं परन्तु यदि अपराध सत्ताधारी दल के बाहुबली ने किया है तो शायद पुलिस प्राथमिकी ही दर्ज न करे। इसके उदाहरण अक्सर रोजाना समाचार पत्रों में छपते हैं। पुलिस व्यवस्था की

इस स्थिति के कारण सत्ता के बाहुवली संगठित अपराध चलाकर जनता को आतंकित करते हैं तथा चुनावों में हिस्सा लेकर देश की विधायिका तथा लोकसभा के सदस्य बनकर देश की नीति निर्धारण करते हैं इस प्रकार भारत की राजनीति में अपराधियों का प्रवेश हुआ। देश की विधानसभाओं तथा लोकसभा के बहुत से सदस्यों के खिलाफ गम्भीर अपराधों के मुकदमें अदालतों में 20-20 साल तक चलते हैं जो आखिर में अक्सर सबूत की कमी के कारण छूट जाते हैं। राजनीति में प्रवेश के बाद ये अपने आपको अपराधी नहीं मानते बल्कि इनको सामंती प्रथा के अनुसार दबंग या प्रभावशाली नेता कहा जाता है। जैसाकि लालू यादव तथा ओम प्रकाश चौटाला के बारे में देखा जा सकता है। इन दोनों को भ्रष्टाचार तथा जनता के धन चोरी में सजा हो चुकी है परन्तु न तो इन्हें शर्मिंदगी है और ना ही कोई पश्चाताप। इस प्रकार की व्यवस्था से आज की युवा पीढ़ी निराश है और अक्सर सवाल करती है कि देश में कानून सबके लिए समान लागू होता नजर नहीं आ रहा है।

अक्सर हमारे नेतागण यह कहते नजर आते हैं कि अभी केवल कुछ वर्ष पहले ही आजादी मिली है परन्तु अब आजादी मिले पूरे 71 साल बीत चुके हैं इसलिए अब हमें देश में गुलामी तथा सामंती सोच को मिटाकर सच्चे प्रजातंत्र की स्थापना करनी चाहिए। चुनाव प्रजातंत्र की मुख्य कड़ी है इसलिए देश में निष्पक्ष तथा सिद्धांतों के आधार पर चुनाव होने चाहिए। राजनैतिक दलों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे अपराधी प्रवृत्ति के लोगों को अपने प्रत्याथी न बनायें। इसके साथ साथ देश में शासन को चलाने वाली व्यवस्था नौकरशाही तथा पुलिस को जनता के प्रति उत्तरदायी बनाने के लिए सिविल सेवा कोड तथा पुलिस एक्ट 1861 में आमूलचूल सुधार करके इन्हें इस प्रकार बनाया जाना चाहिए जिससे ये जनता को बिना दबाव तथा पारदर्शी तरीके से न्याय दे सकें।

इस समय देश विश्व में अपना विशिष्ट स्थान बना रहा है इसलिए हमें अपनी आंतरिक व्यवस्था को भी विश्व स्तर का बनाना चाहिए जिसमें हर नागरिक बिना भय तथा भाई भतीजावाद के न्याय पा सके। प्रधानमंत्री मोदी जिन्होंने इस विषय पर ध्यान दिया है उनसे देश आशा कर रहा है कि देश से सामंती सोच तथा वंशवाद को मिटाकर सच्चे प्रजातंत्र की स्थापना करे। ■

पक्षियों को बचाने के लिए आगे आया अभाविप

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के द्वारा देश भर में पक्षी बचाओं अभियान चलाया जा रहा है। इस अभियान के तहत पक्षियों के लिए दाना एवं पीने के लिए पानी की व्यवस्था की जा रही है। बता दें कि भीषण गर्मी के कारण आये दिन पक्षियों की मौत हो जाती है, कई पक्षियों की प्रजाति भी विलुप्त होने के कगार पर है। ओडिसा के सम्भल में परिषद् के कार्यकर्ताओं द्वारा पक्षी बचाओ अभियान चलाया गया। अभियान के तहत मिट्टी के बर्तन बांटकर लोगों से पक्षियों को बचाने की अपील की।अभाविप के कार्यकर्ताओं ने महाविद्यालयों एवं विद्यालयों में जा कर छात्र- छात्राओं को पक्षी बचाने की अपील की। कार्यकर्ताओं ने बताया कि तेज गर्मी के चलते जंगल में पानी सूख जाने के कारण पक्षियों को पीने के लिए पानी नहीं मिल पाता और पक्षी प्यास के कारण मर जाते हैं। इसलिए अपने- अपने घरों की छत पर किसी बर्तन में पानी अवश्य रखें। वहीं पीलीभीत (उ. प्रदेश) के कार्यकर्ताओं ने पक्षियों के संरक्षण के लिए लोगों को मिट्टी के बर्तन वितरित किए। घरों की छतों पर पानी की व्यवस्था करने की अपील की। अभाविप के प्रकल्प एसएफडी के कार्यकर्ताओं ने अपर जिलाधिकारी, प्रभागीय वनाधिकारी को मिट्टी पात्र देकर प्रशासन से पक्षियों के संरक्षण की दिशा में जागरूकता अभियान छेड़ने की मांग की। अभाविप जयपुर, चितौड़, कोटा के कार्यकर्ताओं ने भी लगातार पक्षियों की संख्या कम होने पर चिंता व्यक्त की है।परिषद के कार्यकर्ताओं ने गर्मी के मौसम में पंक्षियों के संरक्षण को मुहिम शुरू की है। जिसमें समाज के प्रतिष्ठित व अधिकारी वर्ग के लोगों को भी शामिल होने की अपील की जा रही है। यह अपील है घरों की छत पर एक मिट्टी के पात्र में पक्षियों के पानी रखने की। जिसके लिए सराहना भी मिल रही है। साथ ही ग्रीष्मकालीन कार्यक्रमों के तहत जुन - जुलाई तक चलने वाली इस मुहिम में अब तक कई लोग शामिल भी हो चुके हैं।

जेएनयू में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर हमला

वामपंथियों ने रोकी फिल्म की स्क्रीनिंग

।संजीव कुमार सिन्हा।

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू) लगातार खबरों में बना हुआ है। इस विश्वविद्यालय की छवि एक उच्च शैक्षणिक संस्थान की है लेकिन यह अपनी किसी अकादमिक उपलब्धियों को लेकर चर्चा में नहीं रहता है अपितु आए दिन यह कभी संसद पर हुए आतंकी हमले के दोषी अफजल गुरु की बरसी मनाने, कश्मीर की आजादी को लेकर नारे लगाने, महिषासुर पूजन करने, नक्सली हमले में सीआरपीएफ जवानों की मृत्यु पर जश्न मनाने जैसी गतिविधियों को लेकर खबरों में रहता है। ताजा मामला यह है कि यहां एक फिल्म स्क्रीनिंग कार्यक्रम में मारपीट और हिंसा को अंजाम दिया गया।

जेएनयू में गत पांच दशकों से वामपंथ का बोलबाला है। पुस्तकों में ये भले ही अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का राग अलापते हों लेकिन हकीकत में ये इसके सबसे बड़े शत्रु हैं। ऐसा अवश्य होता है कि ये जहां कमजोर होते हैं वहां अभिव्यक्ति की आजादी की खूब बात करते हैं लेकिन जहां इनकी प्रभावी उपस्थिति होती है वहां इस आजादी पर हमले तेज कर देते हैं। इतिहास साक्षी है कि दुनिया भर में जहां कहीं भी वामपंथ का वर्चस्व रहा है वहां हिंसा और दमन के सहारे ही उनकी राजनीति चलती रही है। इस मामले में वामपंथ और तालिबान एक-दूसरे के पर्याय हैं। ये दोनों अपने विचार को बलपूर्वक मनवाने की कोशिश करते हैं और जो इससे इन्कार करता है उन पर प्राणान्तक हमला तक कर बैठते हैं।

जेएनयू में इस बार कला की स्वतंत्र अभिव्यक्ति पर वामपंथियों ने हमला किया। उन्होंने एक डॉक्यूमेंट्री फिल्म के प्रदर्शन को लेकर बवाल किया। गत 27 अप्रैल को जेएनयू स्थित साबरमती ढाबे पर 'In the name of love - melancholy of God's own country' फिल्म की स्क्रीनिंग हो रही थी। इस फिल्म के निर्देशक सुदीप्तो सेन हैं। यह फिल्म केरल में हिंदू लड़कियों के धार्मिक मतांतरण और लव जिहाद के मुद्दे पर केंद्रित है। फिल्म स्क्रीनिंग का आयोजन विवेकानंद विचार मंच और ग्लोबल इंडिया फाउंडेशन की ओर से किया गया था। इसी दौरान वामपंथी छात्र संगठनों के कार्यकर्ता इसे रोकने के लिए साबरमती ढाबे पर पहुंच गए। 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ' और 'विद्यार्थी परिषद्' के खिलाफ नारेबाजी करते हुए उन्होंने इसके प्रदर्शन का विरोध किया और आयोजकों पर हमला बोल दिया, जिसमें परिषद् के कई कार्यकर्ताओं को गंभीर चोटें आईं। इन लोगों ने गार्ड तक को नहीं छोड़ा और इनके हमले में वह घायल हो गया। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के नेता श्री सौरभ शर्मा का कहना है कि वामपंथी छात्र संगठनों के कार्यकर्ताओं ने अपशब्दों का इस्तेमाल किया और उनके साथ मारपीट की। श्री षर्मा ने कहा कि जेएनयू छात्र संघ के पूर्व अध्यक्ष श्री मोहित पांडेय ने उन्हें जान से मारने की धमकी भी दी।

इस डॉक्यूमेंट्री फिल्म के बारे में विस्तार से बात करते हुए इसके निर्देशक श्री सुदीप्तो सेन ने राष्ट्रीय साप्ताहिक पत्रिका 'पांचजन्य' से बातचीत में बताया, ''मेरी फिल्म 'इन द नेम ऑफ लव' में केरल में चल रहे लव जिहाद और कन्वर्जन के बारे में दिखाया गया है। फिल्म पूरे तथ्यों और शोध के साथ बनाई गई है। फिल्म में कहीं भी इस्लाम के बारे में कोई बुरी बात नहीं बोली गई। हां तालिबानी मानसिकता और इस्लामिक स्टेट की कट्टरता के विषय को जरूर उठाया गया है। मुझे इस तरह की कतई उम्मीद नहीं थी कि जेएनयू में ऐसा हंगामा किया जाएगा। यदि वहां पर ऐसा हुआ तो

स्पष्ट है वहां पर तालिबानी और जिहादी मानसिकता वाले लोग सक्रिय हैं। वे नहीं चाहते कि खुले मंच पर उनकी विचारधारा के खिलाफ बात उठाई जाए।

इस फिल्म में हमने कोई भी काल्पनिक चरित्र नहीं लिया है। फिल्म को बनाने से पहले पूरा शोध किया गया। मेरी फिल्म की सह पटकथा लेखक अंबिका जेके हैं। वह केरल की रहने वाली हैं। उन्होंने ही फिल्म को लेकर सारे शोध किए। इसके बाद हमने काम शुरू किया। जब हमारे सामने शोध आया तो पता चला कि केरल में योजनाबद्ध तरीके से कन्वर्जन का खेल खेला जा रहा है। हिंदू लड़कियों का 'ब्रेनवॉश' कर, उनसे शादियां कर उन्हें मुसलमान बनाया जा रहा है। उनके दिमाग में कट्टरपंथी अपनी विचाराधारा को इस कदर भर देते हैं कि वे फिर किसी की भी बात को मानने के लिए तैयार नहीं होती हैं।

केरल मेरी पसंदीदा जगहों में से एक है। मैं पिछले 30 सालों से लगातार केरल जा रहा हूं। वहां मेरे बहुत से परिचित हैं, अच्छे मित्र हैं। पिछले कुछ सालों में केरल में हिंसात्मक घटनाएं काफी बढ़ गई हैं। लव जिहाद जैसे मामलों को मैं अक्सर अखबारों में पढ़ता था। हमने इस विषय पर काम करने का सोचा। इसके लिए पूरा शोध किया गया। जब हमारे सामने आंकड़े आए तो हम चौंक गए। हमने फिल्म में इस बात को बताने की कोशिश की है कि पिछले आठ सालों में केरल में विभिन्न हिस्सों में लगभग 33 हजार लड़कियों का कन्वर्जन किया गया। इसमें ज्यादातर हिंदू लड़कियां हैं। कुछ मामले ईसाइयों के भी हैं।

वर्ष 2008 में केरल के तत्कालीन मुख्यमंत्री वीएस अच्युतानंदन ने दिल्ली में एक प्रेस कांफ्रेंस करके कहा था कि आने वाले 20 सालों में केरल मुस्लिम स्टेट बन जाएगा। उन्होंने तब कन्वर्जन की बात भी कही थी। इस तरह जब केरल में कांग्रेस के मुख्यमंत्री ओमान चांडी ने 2012 में विधानसभा में यह कहा था कि 2006 से 2011 तक लगभग छह से सात हजार हिंदू लड़कियों का कन्वर्जन हुआ। अब दो मुख्यमंत्री एक वामपंथी और दूसरे कांग्रेसी ऐसा बयान दे चुके हैं तो कोई न कोई सत्यता तो इस मामले में होगी ही। केरल पुलिस द्वारा जांचे गए मामलों में भी इस बात का खुलासा हुआ कि वहां कन्वर्जन का खेल चल रहा है। न्यायमूर्ति केटी शंकरन ने भी 2009 में लव जिहाद शब्द का प्रयोग किया था। उन्होंने केरल में हो रही घटनाओं के संदर्भ में कहा था।

शोध के लिए हम केरल में विभिन्न जगहों पर गए थे। केरल पुलिस ने जिन मामलों में जांच की उनको भी खंगाला। हमने कई लड़कियों से बात की जिन्होंने पिछले आठ वर्षों में कन्वर्जन किया। उन्होंने बताया कि वे पहले हिंदू थीं और बाद में उन्होंने इस्लाम स्वीकार किया। केरल में योजनाबद्ध तरीके से यह सब हो रहा है। यह केरल को इस्लामिक स्टेट बनाने की साजिश के तहत हो रहा है। फिल्म बनाने के दौरान जब हमने उन लड़कियों के अनुभव सुने तो दिल दहल गया कि किसी का इतना ब्रेनवॉश कैसे किया जा सकता है।''

भारतीय संविधान का अनुच्छेद 19 (1) क भारतीय नागरिकों को वाक् स्वातंत्र्य और अभिव्यक्ति स्वातंत्र्य का अधिकार देता है। यह एक महत्वपूर्ण अधिकार है। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता फिल्मकार के लिए आधारभूत आवश्यकता है।

किसी फिल्म के प्रति कोई नाराजगी प्रकट कर सकता है, उसके जवाब में फिल्म बना सकता है, पत्र-पत्रिकाओं में लिख सकता है, सेंसर बोर्ड में आपत्ति दर्ज करा सकता है, न्यायालय का दरवाजा खटखटा सकता है, इसका अधिकार सबको है। लेकिन यह अधिकार किसी को नहीं है कि उस फिल्म के विरोध में वह हिंसक अभिव्यक्ति प्रकट करें। एक लोकतांत्रिक देश और सभ्य समाज में इसके लिए कोई जगह नहीं है।

वामपंथियों के बौखलाने के कई कारण हैं। वे हमेशा बहुसंख्यक-हितों पर हमले करते रहे हैं और अल्पसंख्यक-तुष्टिकरण में लगे रहे हैं। बाबरी ढांचा विवाद से लेकर लव जेहाद तक उनकी राजनीति से यह स्पष्ट है कि वे अल्पसंख्यकों के प्रवक्ता बनकर सामने आते रहे हैं।

देश की आजादी के बाद वर्षों तक कांग्रेस का शासन रहने के चलते वामपंथियों ने उनसे सांठ-गांठ कर कला क्षेत्र में अपनी पकड़ मजबूत कर ली। अब उनकी यह पकड़ ढीली हो रही है। राष्ट्रीय विचार के साहित्यकारों, संस्कृतिकर्मियों और कलाकारों की ओर से उन्हें सृजनात्मक चुनौतियां मिल रही हैं। इससे भी वामपंथियों में बौखलाहट है। इसी का नतीजा है कि वे जहां मजबूत हैं जैसे केरल, बंगाल, त्रिपुरा और कुछ जेएनयू जैसे संस्थान, वहां हिंसक हमले का सहारा ले रहे हैं। उनकी पोल खुल रही है और उन्हें करारा जवाब मिल रहा है। ■

परिषद् गतिविधियाँ

अनुभूति के दौरान महाराष्ट्र के तालसारी तालुका के ग्रामीणों से वार्तालाप करते अभाविप के राष्ट्रीय संगठन मंत्री सुनील आंबेकर, क्षेत्रीय संगठन मंत्री विक्रांत खंडेलवाल व अन्य

दिल्ली के प्रसिद्ध भलस्वा झील को बचाने में जुटे विकासार्थ विद्यार्थी के कार्यकर्ता

RNI No.: DELBIL/2017/73636
Date of Posting: 10-11 June, 2018
Date of Publishing: 8 June, 2018

Postal Regd. No.: DL(C)-11/1409/2017-2019
Post Office: NDGPO, New Delhi

राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद्, गुवाहाटी